लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

श्रुति

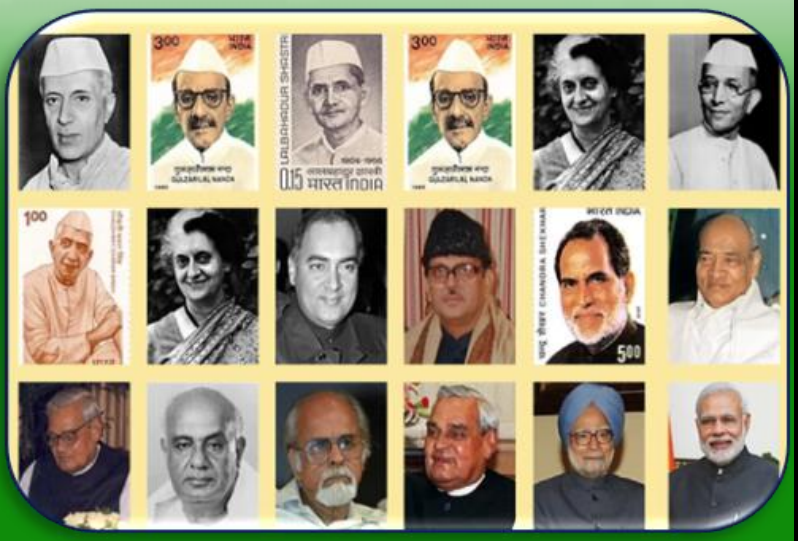

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपरम – 695001

इंकलाब जिंदाबाद
"करो या मरो"
- महात्मा गांधी
"आराम हराम है"
तुम मुझे खून दो
मैं तुम्हें आजादी दूंगा
सारे जहां से अच्छा
हिंदोस्तां हमारा।।
मोहम्मद इकबाल की
सर्वश्रेष्ठ देश भक्ति गीत
भारत छोड़ो आंदोलन
'शेर-ए-पंजाब'
लाला लाजपत राय
"मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश सरकार के
ताबूत में एक-एक कील का काम करेगी।"
वंदे मातरम
सरफरोशी की तमन्ना,
अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना,
बाजु-ए-कातिल में है?

श्रुति

हिंदी गृह पत्रिका

(30वां अंक)

(01 अक्तूबर, 2021 से 31 मार्च, 2022 तक)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695001

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
श्रीमती जी सुधर्मिनी
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक
श्री एन वी मात्तच्चन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदात्री समिति

श्री बीजु जोसफ
वरिष्ठ उप महालेखाकार

श्री एम ए राजन
वरिष्ठ उप महालेखाकार

श्रीमती वल्सम्मा तोमस
उप महालेखाकार

संपादक मंडल

श्री जोय पालयूर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्रीमती के आर रोहिणी
हिंदी अधिकारी, संपादक

संपादन सहयोग

श्रीमती एस संध्या
हिंदी अधिकारी

श्रीमती गेलीकृष्णा सी जी
हिंदी अधिकारी

श्रीमती निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री भारत भूषण
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है । रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे ।

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार
1.	संरक्षक की कलम से.....	
2.	मुख्य संपादक की कलम से.....	
3.	संपादक मंडल की ओर से	
4.	आज़ादी का अमृत महोत्सव – भारत के आदरणीय प्रधान मंत्री जी के उद्बोधन	
6.	देश के अमर स्वतंत्रता सेनानी	निधि लक्ष्मी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
7.	बिछुडन – कहानी	एस श्रीलता, हिंदी प्राध्यापिका
8.	राष्ट्रगान का अर्थ और इसे गाने के नियम..	निधि लक्ष्मी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
9.	प्राचीन भारत के महान मनीषी	
10.	स्वतंत्रता संग्राम के महानायक	लेखा डी पी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
11.	भारत के नोबेल पुरस्कार विजेता	
12.	स्वतंत्रता सेनानियों के नारे.....	
13.	गुरुनानक – जिन्होंने समाज को नई रोशनी दी	कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार
14.	लोकमान्य तिलक: एक युग निर्माता	कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार
15.	दार्शनिक थे सरदार भगत सिंह - 23 मार्च शहीद दिवस	कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार
16.	प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक मंगल पांडे	
17.	भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग में प्रयुक्त पदनाम	

18.	**वर्ष 2020-2021 के दौरान मूल कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना के अधीन पुरस्कार प्राप्त अधिकारी**
19.	**01.10.2021 से 31.03.2021 तक की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची**
20.	**श्रद्धांजलि**

जी सुधर्मिनी
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), केरल

संरक्षक की कलम से .....

*यह प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में हमारे कार्यालय द्वारा ई-पत्रिका 'श्रुति' के 30वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हमारा देश आज़ादी का पचहत्तरवां वर्षगांठ मना रहा है। प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी ने 12 मार्च, 2021 को '**आजादी का अमृत महोत्सव**' का उद्घाटन किया। आजादी के इस अमृत काल में प्रकाशित पत्रिका 'श्रुति' का यह अंक देश के महान स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित है। इस पत्रिका के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के अमर बलिदानियों को हमारी श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है।*

राजभाषा हिंदी केवल विचार प्रकट करने का माध्यम ही नहीं, बल्कि यह संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य भी करती है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका उल्लेखनीय भूमिका निभा रही है। इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रकट करने का अवसर प्राप्त होता है।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल को, रचनाकारों को और पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देनेवाले सभी को धन्यवाद देती हूँ। पत्रिका की अनवरत प्रगति के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

तिरुवनंतपुरम

सुधर्मिनीजी

(जी सुधर्मिनी)
प्रधान महालेखाकार

एन वी मात्तच्चन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

मुख्य संपादक की कलम से .....

यह बड़ी खुशी की बात है कि हमारे कार्यालय की ई-पत्रिका 'श्रुति' का 30वां अंक प्रकाशित हो रहा है। पत्रिका का यह अंक देश की आजादी के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले अमर शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में और राष्ट्र में एकता लाने की दिशा में हिंदी ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज भी हिंदी भाषा समूचे भारत को एकता के सूत्र में बांधने का महान कार्य कर रही है।

इस पत्रिका के प्रकाशन का श्रेय कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह पत्रिका अनवरत प्रगति की ओर अग्रसर होती रहेगी। मुझे पूरा विश्वास है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रगामी प्रयोग में 'श्रुति' अहम भूमिका निभाएगी और कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरणा प्रदान करेगी।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

तिरुवनंतपुरम

एन वी मात्तच्चन

(एन वी मात्तच्चन)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक मंडल की ओर से .....

भारत विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है। हिंदुस्तान और आर्यवर्त के नाम से भी भारत जाना जाता है। यह एक ऐसा देश है जहां अलग–अलग भाषाएं बोली जाती हैं और विभिन्न जाति, धर्म, संप्रदाय और संस्कृति के लोग एक साथ रहते हैं। इसी कारण भारत को 'विविधता में एकता' का देश कहा जाता है। भारत का इतिहास अति प्राचीन, अति विशाल और अति गहरा है। यह देश ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य और आध्यात्म से परिपूर्ण है। 15 अगस्त, 1957 को भारत अंग्रेजी शासन से आजाद हुआ। अब हमारा देश आदरणीय प्रधान मंत्री जी के सक्षम नेतृत्व में सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता के रास्ते में निरंतर आगे बढ़ रहा है और रोज नई–नई ऊंचाइयों को छू रहा है।

आजादी के पचहत्तर साल पूरे होने पर भारतीय संस्कृति और भारत के गौरवशाली इतिहास का जश्न मनाने के लिए भारत सरकार की एक पहल है "आजादी का अमृत महोत्सव"। यह महोत्सव भारत के लोगों को समर्पित है, जिन्होंने भारत की विकासवादी यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अपने अंदर भारत 2.0 को सक्रिय करने के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के दृष्टिकोण को सक्षम करने की शक्ति और क्षमता भी रखी है। "आजादी का अमृत महोत्सव" की आधिकारिक यात्रा 12 मार्च 2021 को शुरू हुई, जिसने हमारी स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ के लिए 75 सप्ताह की उलटी गिनती शुरू की और 15 अगस्त 2023 को एक साल बाद समाप्त होगी। देश की 75 वीं वर्षगांठ का मतलब 75 साल पर विचार, 75 साल पर उपलब्धियां, 75 पर एक्शन और 75 पर संकल्प शामिल हैं, जो स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।

देश के स्वाधीनता संग्राम में अपने प्राण न्यौछावर करने वाले सभी महान विभूतियों एवं देश की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देकर शहीद हुए सभी वीर जवानों एवं महान स्वतंत्रता सेनानियों का आदरपूर्वक नमन करते हुए उनके चरणों में हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" का यह अंक सादर समर्पित करते हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे समस्त कर्मचारियों एवं अधिकारियों के प्रति हम अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिन्होंने अपने योगदान से पत्रिका को पठनीय बना कर अनुगृहीत किया है। मेरा यह विश्वास है कि आप सभी पाठक बंधु अपने महत्वपूर्ण सुझावों से पत्रिका को और अधिक उपयोगी, आकर्षक एवं तकनीकी रूप से सुसंगठित बनाने में सहयोग प्रदान करेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

संपादक मंडल

आज़ादी का अमृत महोत्सव – भारत के आदरणीय प्रधान मंत्री जी के उद्बोधन

"जब हम ग़ुलामी के उस दौर की कल्पना करते हैं, जहां करोड़ों-करोड़ लोगों ने सदियों तक आज़ादी की एक सुबह का इंतज़ार किया, तब ये अहसास और बढ़ता है कि आज़ादी के 75 साल का अवसर कितना ऐतिहासिक है, कितना गौरवशाली है। इस पर्व में शाश्वत भारत की परंपरा भी है, स्वाधीनता संग्राम की परछाई भी है, और आज़ाद भारत की गौरवान्वित करने वाली प्रगति भी है। स्वतंत्रता संग्राम, आइडियास@75, अचीवमेंट्स@75, एक्शन्स@75 और रिज़ॉल्व्स@75, ये पांचों स्तम्भ आज़ादी की लड़ाई के साथ-साथ आज़ाद भारत के सपनों और कर्तव्यों को देश के सामने रखकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।"

"किसी राष्ट्र का गौरव तभी जाग्रत रहता है जब वो अपने स्वाभिमान और बलिदान की परम्पराओं को अगली पीढ़ी को भी सिखाता है, संस्कारित करता है, उन्हें इसके लिए निरंतर प्रेरित करता है। किसी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्ज्वल होता है जब वो अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से पल-पल जुड़ा रहता है। फिर भारत के पास तो गर्व करने के लिए अथाह भंडार है, समृद्ध इतिहास है, चेतनामय सांस्कृतिक विरासत है। इसलिए आज़ादी के 75 साल का ये अवसर एक अमृत की तरह वर्तमान पीढ़ी को प्राप्त होगा। एक ऐसा अमृत जो हमें प्रतिपल देश के लिए जीने, देश के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करेगा।"

"आज भी भारत की उपलब्धियां आज सिर्फ हमारी अपनी नहीं हैं, बल्कि ये पूरी दुनिया को रोशनी दिखाने वाली हैं, पूरी मानवता को उम्मीद जगाने वाली हैं। भारत की आत्मनिर्भरता से ओतप्रोत हमारी विकास यात्रा पूरी दुनिया की विकास यात्रा को गति देने वाली है "।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

"हमारे स्वाधीनता संग्राम में ऐसे भी कितने आंदोलन हैं, कितने ही संघर्ष हैं जो देश के सामने उस रूप में नहीं आए जैसे आने चाहिए थे। ये एक-एक संग्राम, संघर्ष अपने आप में भारत की असत्य के खिलाफ सत्य की सशक्त घोषणाएं हैं, ये एक-एक संग्राम भारत के स्वाधीन स्वभाव के सबूत हैं, ये संग्राम इस बात का भी साक्षात प्रमाण हैं कि अन्याय, शोषण और हिंसा के खिलाफ भारत की जो चेतना राम के युग में थी, महाभारत के कुरुक्षेत्र में थी, हल्दीघाटी की रणभूमि में थी, शिवाजी के उद्घोष में थी, वही शाश्वत चेतना, वही अदम्य शौर्य, भारत के हर क्षेत्र, हर वर्ग और हर समाज ने आज़ादी की लड़ाई में अपने भीतर प्रज्वलित करके रखा था। जननि जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी, ये मंत्र आज भी हमें प्रेरणा देता है।"

"1857 की क्रांति के मंगल पांडे, तात्या टोपे जैसे वीर हों, अंग्रेजों की फौज के सामने निर्भीक गजर्ना करने वाली रानी लक्ष्मीबाई हों, कित्तूर की रानी चेन्नमा हों, रानी गाइडिन्ल्यू हों, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, अशफाकउल्ला खां, गुरू राम सिंह, टिटूस जी, पॉल रामासामी जैसे वीर हों, या फिर पंडित नेहरू, सरदार पटेल, बाबा साहेब आंबेडकर, सुभाषचंद्र बोस, मौलाना आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खान, वीर सावरकर जैसे अनगिनत जननायक! ये सभी महान व्यक्तित्व आजादी के आंदोलन के पथ प्रदर्शक हैं। आज इन्हीं के सपनों का भारत बनाने के लिए, उनको सपनों का भारत बनाने के लिए हम सामूहिक संकल्प ले रहे हैं, इनसे प्रेरणा ले रहे हैं।"

"आजादी के आंदोलन के इतिहास की तरह ही आजादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा, सामान्य भारतीयों के परिश्रम, इनोवेशन, उद्यम-शीलता का प्रतिबिंब है। हम भारतीय चाहे देश में रहे हों, या फिर विदेश में, हमने अपनी मेहनत से खुद को साबित किया है। हमें गर्व है हमारे संविधान पर। हमें गर्व है हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर। लोकतंत्र की जननी भारत, आज भी लोकतंत्र को मजबूती देते हुए आगे बढ़ रहा है। ज्ञान-विज्ञान से समृद्ध भारत, आज मंगल से लेकर चंद्रमा तक अपनी छाप छोड़ रहा है। आज भारत की सेना का सामर्थ्य अपार है, तो आर्थिक रूप से भी हम तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। आज भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम, दुनिया में आकर्षण का केंद्र बना है, चर्चा का विषय है। आज दुनिया के हर मंच पर भारत की क्षमता और भारत की प्रतिभा की गूंज है। आज भारत अभाव के अंधकार से बाहर निकलकर 130 करोड़ से अधिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आगे बढ़ रहा है।"

"गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है- 'सम-दुःख-सुखम् धीरम् सः अमृतत्वाय कल्पते'। अर्थात्, जो सुख-दुःख, आराम चुनौतियों के बीच भी धैर्य के साथ अटल अडिग और सम रहता है, वही अमृत को प्राप्त करता है, अमरत्व को प्राप्त करता है। अमृत महोत्सव से भारत के उज्ज्वल भविष्य का अमृत प्राप्त करने के हमारे मार्ग में यही मंत्र हमारी प्रेरणा है।"

"हमारे वेदों का वाक्य है- मृत्योः मुक्षीय मामृतात्। अर्थात, हम दुःख, कष्ट, क्लेश और विनाश से निकलकर अमृत की तरफ बढ़ें, अमरता की ओर बढ़ें। यही संकल्प आज़ादी के इस अमृत महोत्सव का भी है। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी - आज़ादी की ऊर्जा का अमृत, आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी – स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी – नए विचारों का अमृत। नए संकल्पों का अमृत। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी – आत्मनिर्भरता का अमृत। और इसीलिए, ये महोत्सव राष्ट्र के जागरण का महोत्सव है। ये महोत्सव, सुराज्य के सपने को पूरा करने का महोत्सव है। ये महोत्सव, वैश्विक शांति का, विकास का महोत्सव है।"

"हमारे युवा, हमारे स्कॉलर्स ये ज़िम्मेदारी उठाएँ कि वो हमारे स्वाधीनता सेनानियों के इतिहास लेखन में देश के प्रयासों को पूरा करेंगे। आज़ादी के आंदोलन में और उसके बाद हमारे समाज की जो उपलब्धियां रही हैं, उन्हें दुनिया के सामने और प्रखरता से लाएँगे। मैं कला-साहित्य, नाट्य जगत, फिल्म जगत और डिजिटल इंटरनेटनमेंट से जुड़े लोगों से भी आग्रह करूंगा, कितनी ही अद्वितीय कहानियाँ हमारे अतीत में बिखरी पड़ी हैं, इन्हें तलाशिए, इन्हें जीवंत कीजिए, आने वाली पीढ़ी के लिए तैयार कीजिए। अतीत से सीखकर भविष्य के निर्माण की ज़िम्मेदारी हमारे युवाओं को ही उठानी है। साइंस हो, टेक्नोलॉजी हो, मेडिकल हो, पॉलिटिक्स हो, आर्ट या कल्चर हो, आप जिस भी फील्ड में हैं, अपनी फील्ड का कल, आने वाला कल, बेहतर कैसे हो इसके लिए प्रयास कीजिए।"

***130** करोड़ देशवासी आज़ादी के इस अमृत महोत्सव से जब जुड़ेंगे, लाखों स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणा लेंगे, तो भारत बड़े से बड़े लक्ष्यों को पूरा करके रहेगा। अगर हम देश के लिए, समाज के लिए, हर हिन्दुस्तानी अगर एक कदम चलता है तो देश **130** करोड़ कदम आगे बढ़ जाता है। भारत एक बार फिर आत्मनिर्भर बनेगा, विश्व को नई दिशा दिखा देगा।*

देश के अमर स्वतंत्रता सेनानी

निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

रानी लक्ष्मी बाई : भारत देश के उत्तर में झाँसी नाम की जगह है, यहाँ की रानी लक्ष्मी बाई थी। इनका जन्म महाराष्ट्रियन परिवार में हुआ था। उस समय भारत का गवर्नर डलहौजी था, उसने नियम निकाला कि जिस भी राज्य में राजा नहीं है, वहां अंग्रेजों का अधिकार होगा। उस समय रानी लक्ष्मी बाई विधवा थी, उनके पास एक गोद लिया हुआ बेटा दामोदर था। उन्होंने अंग्रेजो के सामने घुटने टेकने से मना कर दिया और अपनी झाँसी को बचाने के लिए उनके खिलाफ जंग छेड़ दी। मार्च 1858 में अंग्रेजों से लगातार दो हफ्ते तक युद्ध किया, जो वो हार गई थी। इसके बाद वे ग्वालियर चली गई जहाँ एक बार फिर उनका युद्ध अंग्रेजों से हुआ। 1857 में हुई लड़ाई में रानी लक्ष्मी बाई का विशेष योगदान था।। इनका नाम भारत के स्वतंत्रता सेनानियों मे बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

मंगल पांडेय : भारत के इतिहास में स्वतंत्रता सेनानीयों में सबसे पहले मंगल पांडे का नाम आता है। 1857 की लड़ाई के समय से इन्होंने आजादी की लड़ाई छेड़ दी और सबको इसमें साथ देने को कहा। मंगल पांडे ईस्ट इंडिया कंपनी में सैनिक थे। 1847 में खबर फैली की ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा जो बन्दूक का कारतूस बनाया जाता है, उसमें गाय की चर्बी का इस्तेमाल होता है, इसे चलाने के लिए कारतूस को मुह से खीचना पड़ता था, जिससे गाय की चर्बी मुहं में लगती थी, जो हिन्दू मुस्लिम दोनों धर्मो के खिलाफ था। उन्होंने अपनी कंपनी को बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं हुआ। 8 अप्रैल, 1857 को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के इस महानायक की मृत्यु हो गई।

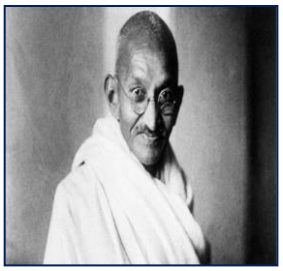

महात्मा गाँधी : राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात में हुआ था। अहिंसावादी महात्मा गाँधी ने अपनी स्वतंत्रता की लड़ाई पूरी सच्चाई और ईमानदारी से लड़ी। वे अहिंसा पर विश्वास रखते थे और कभी किसी अंग्रेज को गाली भी नहीं दी। इस वजह से अंग्रेज उनकी बहुत इज्जत भी करते थे। सत्याग्रह आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, असहयोग आंदोलन, साइमन वापस जाओ, नागरिक अवज्ञा आंदोलन और भी बहुत से आंदोलन महात्मा गाँधी ने शुरू किए। वे सबको स्वदेशी बनने के लिए प्रेरित करते थे और अंग्रेजो के सामान का उपयोग करने से मना करते थे। महात्मा गाँधी के प्रयासों के चलते अंग्रेजों ने 15 अगस्त 1947 को देश छोड़ दिया। 30 जनवरी, 1948 को इनकी हत्या हुई थी।

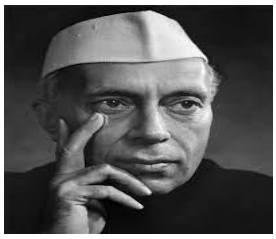

जवाहरलाल नेहरु : पंडित जवाहरलाल नेहरु को आज बच्चा बच्चा जानता है । ये भारत के स्वतंत्रता सेनानी थे । इनके पिता मोती लाल नेहरु एक बैरिस्टर और नेता थे । 1912 में नेहरु जी विदेश से अपनी पढाई पूरी करने के बाद भारत में बैरिस्टर की तरह काम करने लगे । महात्मा गाँधी के संपर्क में आने के बाद वे आजादी की लड़ाई में कूद पड़े, और भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष बन गए । आजादी के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरु देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने । आजादी की लड़ाई में वे महात्मा गाँधी के साथ मिल कर अंग्रेजों के खिलाफ खड़े रहे । बच्चों से उन्हें विशेष प्रेम था, इसलिए आज भी हम उनके जन्म दिन को बाल दिवस के रूप में मनाते हैं । 27 मई, 1964 को दिल्ली में उनका निधन हुआ ।

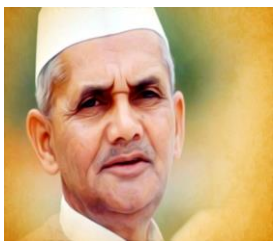

लाल बहादुर शास्त्री : आजाद भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी थे । शास्त्री जी ने देश की आजादी के लिए भारत छोड़ो आंदोलन, नमक सत्याग्रह आंदोलन और असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया था । ये भारत के स्वतंत्रता सेनानी थे । आजादी के समय उन्होंने 9 साल जेल में भी बिताये । आजादी के बाद वे गृह मंत्री बन गए और फिर 1964 में दूसरे प्रधानमंत्री । 1965 में हुई भारत पाकिस्तान की लड़ाई में उन्होंने मोर्चा संभाला था । "जय जवान, जय किसान" का नारा इन्होंने ही दिया था । 1966 में जब वे विदेश दौरे पर थे तब अचानक दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई ।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक : "स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे ।" पहली बार यह नारा बाल गंगाधर तिलक जी ने ही बोला था । डेकन एजुकेशन सोसाइटी की इन्होंने स्थापना की थी, जहाँ भारतीय संस्कृति के बारे में पढ़ाया जाता था, साथ ही ये स्वदेशी काम से जुड़े रहे । बाल गंगाधर तिलक पूरे भारत में घूम-घूम कर लोगों को आजादी की लड़ाई में साथ देने के लिए प्रेरित करते थे । इनकी अंतिम यात्रा में महात्मा गाँधी के साथ लगभग 20 हजार लोग शामिल हुए थे ।

लाला लाजपत राय : लाला लाजपत राय जी पंजाब केसरी नाम से प्रसिद्ध थे । लाला लाजपत राय भारतीय नेशनल कांग्रेस के बहुत प्रसिद्ध नेता और भारत के स्वतंत्रता सेनानी थे । लाला लाजपत राय 'लाल-बाल-पाल' की तिगड़ी में शामिल थे । ये तीनों कांग्रेस के मुख्य और प्रसिद्ध नेता थे । 1914 में वे भारत की स्थिति बताने ब्रिटेन गए थे, लेकिन विश्व युद्ध होने की वजह से वे वहां से लौट ना सके । 1920 में जब वे भारत आये, तब जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ था, इसके विरुद्ध में उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया था । एक आंदोलन के दौरान अंगेजों के लाठी चार्ज से वे बुरी तरह घायल हुए, जिसके पश्चात् उनकी मृत्यु हो गई ।

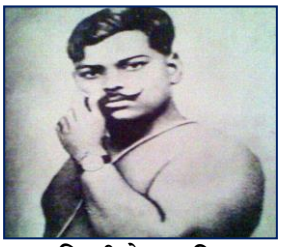

चंद्रशेखर आजाद : चंद्रशेखर आजाद नाम की ही तरह आजाद थे, उन्होंने स्वतंत्रता की आग में घी डालने का काम किया था । उनका परिचय इस प्रकार था, चंद्रशेखर आजाद स्वतंत्रता की लड़ाई में युवाओं को आगे आने के लिए प्रेरित करते थे, उन्होंने युवा क्रांतिकारीयों की एक फ़ौज खड़ी कर दी थी । उनकी सोच थी की स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए हिंसा जरूरी है, इसलिए वे महात्मा गाँधी से अलग कार्य करते थे । चंद्रशेखर आजाद का खौफ अंगेजों में बहुत था । इन्होंने काकोरी ट्रेन लूटने की योजना बनाई थी और इसे लूटा था । किसी ने इनकी खबर अंग्रेजों को दे दी, जिससे अंग्रेज इन्हें पकड़ने के लिए इनके पीछे पड़ गए । चंद्रशेखर आजाद किसी अंग्रेज के हाथों नहीं मरना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपने आप को गोली मार ली और शहीद हो गए ।

सुभाषचंद्र बोस : सुभाषचंद्र बोस को नेता जी कहते है इनका जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा में हुआ था । 1919 को वे पढाई के लिए विदेश चले गए, तब उन्हें वहां जलियाँवाला बाग हत्याकांड का पता चला, जिससे वे अचंभित हो गए और 1921 को भारत लौट आये । भारत आकर ये भारतीय कांग्रेस में शामिल हुए और नागरिक अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया । अहिंसावादी गाँधी जी की बातें उन्हें गलत लगती थी, जिसके बाद वे हिटलर से मदद मांगने के लिए जर्मनी गए । जहाँ उन्होंने इंडियन नेशनल आर्मी (आईएनए) संगठित की । कहते हैं कि 17 अगस्त, 1945 को उनका प्लेन क्रेश हो गया, जिससे उनकी मृत्यु हो गई । इनकी मृत्यु से जुड़े तथ्य आज भी रहस्य बने हुए है ।

भगत सिंह : भगत सिंह का नाम बच्चा बच्चा जानता है । युवा नेता भगत का जन्म 27 सितंबर, 1907 को पंजाब में हुआ था । इनके पिता और चाचा दोनों स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल थे, जिससे बचपन से ही इनके मन में देश के प्रति लगाव था और वे बचपन से ही अपने देश के लिए कुछ करना चाहते थे । 1921 में इन्होंने असहयोग आंदोलन में अपनी हिस्सेदारी दी, लेकिन भगत ने यह छोड़ नौजवान भारत सभा बनाई, जो पंजाब के युवाओं को आजादी में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करती थी । चंद्रशेखर आजाद के साथ मिलकर इन्होंने आजादी के लिए बहुत से कार्य किये । 1929 में इन्होंने संसद में बम फेंक दिया, जिसके बाद इन्हें 23 मार्च 1931 को राजगुरु और सुखदेव के साथ फांसी की सजा दी गई ।

भीमराव अम्बेडकर : दलित परिवार में पैदा हुए भीमराव अम्बेडकर जी ने भारत से जाति व्यवस्था ख़त्म करने के लिए बहुत कार्य किये । भीमराव अम्बेडकर जी ने हमेशा सबको समझाया कि जाति धर्म मानवता से बढ़ कर नहीं होता है । हमें सबके साथ समान व्यवहार करना चाहिए । अपनी बुद्धि के बदौलत वे भारतीय संविधान समिति के अध्यक्ष बन गए । जनतांत्रिक भारत का संविधान डॉ भीमराव अम्बेडकर ने ही लिखा था ।

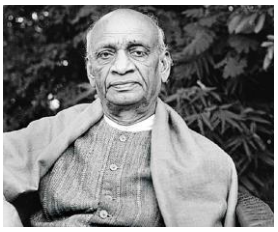

सरदार वल्लभभाई पटेल : भारतीय कांग्रेस के नेता सरदार वल्लभभाई पटेल एक वकील थे। वल्लभभाई जी ने नागरिक अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन में हिस्सा लिया था। वल्लभभाई जी ने देश की आजादी के बाद आजाद भारत को संभाला। आजाद भारत बहुत सारे राज्यों में बंट गया था, जहाँ पाकिस्तान भी अलग हो चुका था। उन्होंने देश के सभी लोगों को समझाया कि देश की रक्षा के लिए सभी राजतंत्र समाप्त कर दिए जाएंगे और पूरे देश में सिर्फ एक सरकार का राज्य चलेगा। उस समय देश को ऐसे नेता की जरूरत थी जो उसे एक तार में बांधे रखे बिखरने न दे। आजादी के बाद भी देश में बहुत परेशानियाँ थी जिसे सरदार वल्लभभाई पटेल ने बहुत अच्छे से सुलझाया था।

सरोजिनी नायडू : सरोजिनी नायडू एक कवयित्री और सामाजिक कार्यकर्ता थी। ये पहली महिला थी जो भारत व भारतीय नेशनल कांग्रेस की गवर्नर बनी। सरोजनी नायडू भारत के संबिधान के लिए बनी समिति की सदस्य थी। बंगाल विभाजन के समय ये देश के मुख्य नेता जैसे महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरु के संपर्क में आई और फिर आजादी की लड़ाई में सहयोग देने लगी। ये पूरे भारत में घूम घूम कर लोगों को अपनी कविता और भाषण के माध्यम से स्वतंत्रता के बारे में बताती थी। देश की मुख्य महिला सरोजनी नायडू का जन्म दिवस अब महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

बिरसा मूंडे : बिरसा मूंडे का जन्म 1875 को रांची में हुआ था। बिरसा मूंडे ने बहुत से कार्य किये, आज भी बिहार व झारखण्ड के लोग इन्हें भगवान की तरह पूजते हैं और उन्हें "धरती बाबा" कहते हैं। वे सामाजिक कार्यकर्त्ता थे जो समाज को सुधारने के लिए हमेशा कुछ न कुछ करते रहते थे। 1894 में अकाल के दौरान बिरसा मूंडे ने अंग्रेजों से लगान माफ़ करने को कहा जब वो नहीं माने तो बिरसा मूंडे ने आंदोलन छेड़ दिया। 9 जून, 1900 को महज 25 साल की उम्र में बिरसा मूंडे ने अंतिम साँसें लीं।

अशफाक़उल्ला खान : भारत देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले अशफाक़उल्ला खान एक निर्भय, साहसी और प्रमुख स्वतंत्रता संग्रामी थे। वे उर्दू भाषा के कवि थे। काकोरी कांड में अशफाक़उल्ला खान का मुख्य चेहरा था। इनका जन्म 22 अक्टूबर, 1900 को उत्तर प्रदेश में हुआ था। क्रांतिकारी विचारधारा के अशफाक़उल्ला खान की सोच थी की अंग्रेज से शांति से बात करना बेकार है उन्हें सिर्फ गोली और विस्फोट की आवाज सुनाई देती है। तब राम प्रसाद बिस्मिल के साथ मिल कर इन्होंने काकोरी में ट्रेन लूटने की योजना बनाई। राम प्रसाद के साथ इनकी गहरी दोस्ती थी। 9 अगस्त, 1925 को राम प्रसाद के साथ अशफाक़उल्ला खान और 8 अन्य साथियों के साथ मिलकर इन्होंने ट्रेन में अंग्रेजो का खजाना लूटा था।

बहादुर शाह जफ़र : मुग़ल साम्राज्य का आखिरी शासक बहादुर शाह जफ़र का नाम भी स्वतंत्रता संग्रामी की सूची में शामिल है। 1857 की लड़ाई में इन्होने मुख्य भूमिका निभाई थी। ब्रिटिशों की सेना ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ शाह जफ़र ने अपनी विशाल सेना खडी कर दी थी, और खुद अपनी सेना के सेनापति थे। उनके इस काम के लिए उन्हें विद्रोही कहा जाने लगा तथा उन्हें बंगलादेश के रंगून में निर्वासित कर दिया गया था।

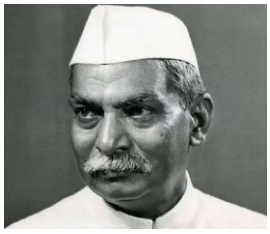

डॉ राजेन्द्र प्रसाद : हम डॉ राजेन्द्र प्रसाद को देश के पहले राष्ट्रपति के रूप में जानते है, लेकिन देश को आजाद कराने के लिए वे हमेशा सभी देश वासियों के साथ खड़े रहे, स्वतंत्रता की लड़ाई में राजेंद्र प्रसाद का नाम भी सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ है। इन्हें हमारे देश के संविधान का वास्तुकार कहा जाता है। महात्मा गाँधी को अपना आदर्श मानने वाले राजेन्द्र प्रसाद कांग्रेस में शामिल होकर बिहार से एक प्रमुख नेता बन गए। नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन में इन्होने मुख्य भूमिका निभाई थी, जिसके लिए उन्हें कई बार जेल की यातनाएं भी सहनी पड़ी थी।

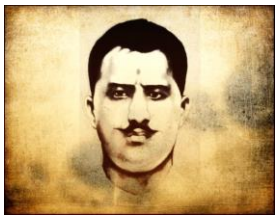

राम प्रसाद बिस्मिल : राम प्रसाद बिस्मिल स्वतंत्रता सेनानी थे, उनका नाम मैनपुरी व काकोरी कांड में सबसे ज्यादा प्रख्यात है। ब्रिटिश शासन के वे सख्त खिलाफ थे, वे बहुत बड़े कवि भी थे, जो अपने मन की बात कविताओं के जरिये सब तक पहुंचाते थे। ये हिंदी उर्दू भाषा में लिखा करते थे। 'सरफरोशी की तम्मना अब हमारे दिल में है' जैसी महान यादगार कविता इन्होंने लिखी थी।

सुखदेव थापर : सुखदेव देश के स्वतंत्रता संग्रामियों में से एक थे, उन्होंने भगत सिंह व राजगुरु के साथ दिल्ली की असेंब्लि में बम फोड़ा था, और अपने आप को गिरफ्तार करा दिया था। इसके पहले उनका नाम ब्रिटिश अफसर को गोली मारने के लिए भी सामने आया था। सुखदेव भगत सिंह के अच्छे मित्र भी थे, इन्हें भगत सिंह के साथ ही 23 मार्च, 1931 को फांसी दी गई थी। युवाओं के लिए ये आज भी एक प्रेरणा का स्त्रोत्र है।

शिवराम राजगुरु : शिवराम राजगुरु भगत सिंह के ही साथी थे, जिन्हें मुख्यतः ब्रिटिश राज के पुलिस अधिकारी को मारने के लिए जाना जाता है। ये हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन में कार्यरत थे, जो भारत देश की आजादी के लिए अपने प्राण भी देने को तैयार थे। राजगुरु गाँधी जी की अहिंसावादी बातों के बिलकुल विरोध में थे, उनके हिसाब से अंग्रजों को मार मारकर अपने देश से निकलना चाहिए।

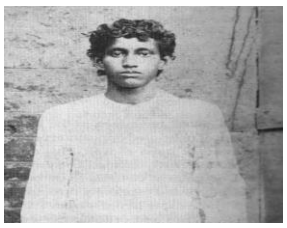

खुदीराम बोस : ये सबसे नौजवान स्वतंत्रता संग्रामी रहे है। स्वतंत्रता की लड़ाई के शुरुआती दौर में ही ये उसमें कूद पड़े थे। बचपन से देशप्रेम के चलते इन्होने आजादी को ही अपनी मंजिल बना ली थी। उन्हें शहीद लड़का कहके सम्मान दिया जाता है। स्कूल में पढने के दौरान खुदीराम ने अपने टीचर से उनका रिवाल्वर मांग लिया था, ताकि वे अंग्रेजो को मार सकें। मात्र 16 साल की उम्र में इन्होंने पास के पुलिस स्टेशन व सरकारी दफ्तर में बम ब्लास्ट कर दिया। जिसके 3 साल बाद इन्हें इसके जुल्म में गिरफ्तार किया गया, और फांसी की सजा सुने गई। जिस समय इनको फांसी हुई थी, इनकी उम्र 18 साल 8 महीने 8 दिन थी।

दुर्गावती देवी (दुर्गा भाभी) : ब्रिटिश राज के खिलाफ ये महिला उस समय खड़ी रही जब देश में महिलाओं को घर से बाहर तक निकलने की इजाज़त नहीं थी। भगत सिंह जब ब्रिटिश ऑफिसर को मार कर भागते हैं, तब वे दुर्गावती के पास मदद के लिए जाते है। दुर्गावती भगत सिंह व राजगुरु के साथ ही ट्रेन में सफ़र करती है, जहाँ दुर्गावती इन्हें ब्रिटिश पुलिस से बचाती है, दुर्गावती भगत सिंह की पत्नी बन जाती है, जिससे किसी को शक ना हो। इनके पति का नाम भगवतीचरण बोहरा था, जो भगत सिंह के साथ ही आजादी के लड़ाई में खड़े हुए थे। उनकी पार्टी के सभी लोग इन्हें दुर्गा भाभी कहा करते थे। दुर्गावती नौजवान भारत सभा की सदस्य भी थी।

गोपाल कृष्ण गोखले : भारत के स्वतंत्रता सैनानी की सूची में शामिल नाम की बात करें तो उनमें गोपाल कृष्ण गोखले का नाम कभी नहीं भूला जा सकता है। गोपाल कृष्ण गोखले पेशे से एक शिक्षक थे, जो बाद में कॉलेज के प्रिंसिपल भी बने। गोपाल कृष्ण जी अपनी बुद्धिमता के कारण जाने जाते थे। भारत को आजाद कराने में इन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसलिए इन्हें स्वतंत्रता सेनानी कहा जाता है। इन्हें महात्मा गांधी जी अपना राजनितिक गुरु भी मानते थे, वे उनसे काफी स्नेह एवं उनका सम्मान करते थे। उनकी भारत देश के प्रति कर्त्तव्य एवं देश भक्ति के कारण वे काफी प्रचलित हुए, और अल्पायु में ही उनकी मृत्यु हो गई।

मदन मोहन मालवीय : मदन मोहन मालवीय जी का नाम कौन नहीं जानता, ये भारत के पहले और आखिरी ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें महामना की सम्मानजनक उपाधि मिली थी। पेशे से मदनमोहन मालवीय जी एक पत्रकार एवं वकील दोनों थे। ये अपनी मातृभूमि से बहुत प्रेम करते थे। मदनमोहन मालवीय जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 4 बार अध्यक्ष चुने गए थे। इन्होने ने ही बनारस में स्थित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की और यह भारत में शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। भारत के स्वतंत्र होने में इनका भी बहुत बड़ा योगदान रहा था।

शहीद उधम सिंह : आपने सन 1919 में हुए जलियांवाला बाग़ हत्याकांड के बारे में तो सुना ही होगा, उस हत्याकांड के चश्मदीद गवाह कम उम्र के वीर बहादुर शहीद उधम सिंह जी थे। जिन्होंने अपनी आँखों से उस हत्याकांड को देखा जिसमें हजारों लोगों की मृत्यु हुई थी। इस हत्याकांड का जिम्मेदार डायर ने जिस क्रूरता से यह हत्याकांड कराया था, उसे इन्होंने अपनी आँखों से देखा और फिर उन्होंने संकल्प लिया कि 'आज से उनके जीवन का केवल एक ही संकल्प है डायर की मृत्यु'। इसके बाद वे क्रांतिकारी दलों के साथ शामिल हुए और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी नेताओं की पद चिन्हों पर चलते हुए इन्होंने अपना योगदान दिया और फिर अल्पायु में ही उनकी मृत्यु हो गई।

उपर्युक्त के अलावा भारत की स्वतंत्रता में योगदान देनेवालों में ***नाना साहेब, तांतिया टोपे, विपिन चन्द्र पाल, चित्तरंजन दास, राजा राममोहन राय, दादाभाई नौरोजी, वीर विनायक दामोदर सावरकर, कस्तूरबा गाँधी, गोविन्द वल्लभ पन्त, रविन्द्रनाथ टैगोर, अबुल कलाम आजाद, रसबिहारी बसु, जय प्रकाश नारायण, मदन लाल ढींगरा, गणेश शंकर विघार्थी, करतार सिंह सराभा, बटुकेश्वर दत्त, सूर्या सेन, गणेश घोष, बीना दास, कल्पना दत्ता, एनी बीसेंट, सुबोध रॉय, अश्फाक अली, बेगम हज़रात महल*** आदि के नाम भी चिरस्मरणीय रहेंगे। इनके जीवन से हम बहुत कुछ सीख कर अपने जीवन में उतार सकते है। आज भी भारत को ऐसे ही क्रांतिकारियों की जरुरत है, जो देश को भ्रष्टाचार, गरीबी से आजाद कराये। इनके साथ-साथ अनगिनत वीर सपूतों के बलिदान से ही हमारा देश स्वतंत्र हुआ था, जो आज भी गुमनामी के अंधेरे में हैं। देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्षो का सामना करनेवाले, अनेक यातनाएं सहनेवाले और जान न्योछावर करनेवाले वीरों को शत् शत् प्रणाम।

बिछुड़न - कहानी

एस श्रीलता
हिंदी प्राध्यापिका

सुना था कि वासुपिल्लै यानी हमारे नाना जी अव्वल दर्जे का गुंडा थे। छ: पैमान लंबा, मज़बूत, अधनंगा शरीर, कंधे में अंगोछा, कमर में छुरा। चलते तो घास भी सिहरते। जहाँ भी चले, उनको देखते ही लोग जगह खाली कर देते हैं, क्योंकि वे अंदाजा लगा सकते थे कि अभी वहाँ 'कुछ होने वाला' है। एक वार के दो टुकड़े – इस कहावत का वे जीवंत प्रमाण थे।

घर में नानी चुप थी। घर की औरतें मुँह न खोले, यही रीति थी। खाना पकाना, घर के सभी लोगों का ख्याल रखना - बस यही उनका काम रहा। घर में अतिथि नहीं आते थे। अगर आते भी तो जिस काम के लिए पधारे हैं उसे तुरंत निपटाकर चले जाना पड़ता था। पड़ोसियों का आना-जाना बिलकुल बंद। संक्षेप में, जेल की चहरदीवारी पद्मावति अम्मा के लिए इससे भी बेहतर थी।

वासुपिल्लै-पद्मावति अम्मा दंपतियों की नौ संतानें थीं। बड़ा बेटा पद्मनाभन पढ़ने में तेज़ था। परंतु नाना जी उसकी कोई परवाह नहीं करते थे। उनके पास पांच बीघा ज़मीन थी। खेती-बाड़ी से रोज़मर्रा की ज़िंदगी गुज़रती थी। बेटा अपनी नज़र खेती पर डाले, यही उनका विचार था। आखिर, सबसे बड़ा होने के कारण घर के प्रति उसे भी ज़िम्मेदार रहना है न ?

खेतों में सहायता करने के लिए वे गाय-बैल पालते थे। किसान को खेत जोतने के लिए बैलों की जोडी की सहायता चाहिए थी। उनमें 'अप्पु' प्रमुख है हल चलाते समय अप्पु का चाल कुछ देखते ही बनता था। ऐसा लगता था कि उसे इस काम में विशेष तरीके का प्रशिक्षण मिला हो। उसका लंबा-ऊँचा कद, कंधे, विशाल राजमान पीठ, निरीह चेहरा, मोटी तगडी टांगें, सबकुछ देखते ही बनता था। पद्मनाभन सुबह उठकर गाय-बैल को चरने छोड़ने के लिए रस्सी खोल देता, गोबर हटाता, आस-पास की साफ-सफाई करता और स्कूल चले जाता। शाम को स्कूल से वापस आकर इन सबको वापस बाड़े में बांध देता। बीच-बीच में उनको नहलाने नदी की तरफ ले चलता।

रोज़ के जैसे उस दिन भी वह ढ़ेर से फूस खींच रहा था। अचानक पास कोई आवाज़ सुनकर उसने उस तरफ देखा तो हैरान रह गया। करीब एक महीने से घर से गायब काली मुर्गी, दस-बारह छोटों को साथ लेकर, फूस के ढेर के

नीचे से होकर बाहर निकल रही थी। पद्मनाभन खुशी से फूला न समा पाया। ज़ोर से चिल्लाते हुए वह रसोई-घर की तरफ भागा, जहाँ अम्मा नाश्ता बना रही थीं। "देखो माँ, यह कौन इस तरफ आ रही है !"

पद्मावति अम्मा बाहर झांकी तो विस्मित रह गईं। "अरे", वे उसे पुचकारते स्वर में बोलीं, "यह कौन आई है, काली? हमने सोचा कि तू सियार के मुंह में चली गई होगी।" अम्मा और उनकी नौ संतानें एक-एक करके उन्हें दाना खिलाने लगे। नवों ने झुंड में से अपने लिए एक-एक बच्चे को चुन भी लिया। "यह भूरा वाला मेरा है, यह काला वाला मेरा है" कहकर वे शोरगुल मचाने लगे। सब इसलिए जोश में थे कि हफ्तों से बिछड़ी प्यारी काली अब बच्चों के साथ उन्हें वापस मिली है। वासु पिल्लै घरेलू कामकाज में, घर की व्यवस्था में पक्का थे। वे अप्पु की देखरेख में विशेष ध्यान देते थे। घर की चारों तरफ कई प्रकार के पेड़-पौधे लगाए गए थे। इमली और कटहल के पेड़ ज्यादा थे क्योंकि हल जोतने के लिए जो बैलों के जोड़े थे उनके खाने में इनके बीजों का विशेष स्थान है। इन्हें उबालकर उनको खिलाना उनको मज़बूत बनाने के लिए आवश्यक था, इसलिए घर में रखी बड़ी हांडियां इन बीजों से भरी हुई थीं। अप्पु को अगर ज़रा-सा चोट लगे तो पद्मनाभन को डांट अवश्य मिलता था। घर में भोज्य-सामग्री की कोई कमी नहीं थी। नारियल का तेल, तिल का तेल सब निकालकर मटकियों में रखा होता था। बीच-बीच में वे शिकार करके खरगोश या सूअर को ले आते थे। तालाब से मछली पकड़कर लाते थे। पद्मावति अम्मा के हाथों पकाए मछली या मांस, कमाल का होता था जिसे एक बार चखे तो फिर दो-तीन बार मांगे बिना खाने की जगह से उठना मुश्किल था। इसलिए पिता-बच्चे खुशी-खुशी खाना खाकर सो जाते। यह बात पद्मावति अम्मा को भी भला लगती थी। व्यस्तताओं के बीच भी, एक बार अप्पु के पास गए बिना वासु पिल्लै की आँख नहीं लगती थी।

जब नाना जी बाड़े में कदम लगाते तो अप्पु की आँखें अनजाने ही चमक उठतीं। सहज तरीके से वह अपने बाबू जी के बदन पर बदन रगड़ता। उन्हें प्यार से चाटता। मालिक भी उससे तनिक प्यार दिखाता। उसके मुंह और कानों को खुजलाता। कभी तेल से उसके बदन पर मालिश करता। उसकी कुदरती चेष्टाओं को अपनी चेष्टाओं से जवाब दे देता। जानवर और मनुष्य का यह मिलन दूसरों को अजीब लगता, पर सहज रूप से प्रकृति से मिलने में वासु पिल्लै की एक अलग रुचि थी।

एक बार किसी काम के लिए वहाँ आए रामुण्णि को नानाजी ने पकड़कर पेड़ से बांधा। वह जानता था कि यह आदमी खतरनाक है, पर अपना कसूर क्या था, यह उसकी समझ में नहीं आया। कुछ समय पहले उसने पास के नारियल के पेड़ पर, यों ही कुल्हाड़ी मारी थी। नानाजी के आक्रोश से उसे पता चला कि वे पेड़ को इतनी ममता से पालते हैं कि उस पर चोट लगाना अपराध माना जाता है। सुबह से शाम तक बंधन में रहा। उसे बहुत बुरा लगा होगा। पर बाबूजी अडिग रहे। परिणाम यह निकला कि रामुण्णि ने फिर कभी उस रास्ते से आने की हिम्मत नहीं की।

अप्पु को नहलाने का तरीका अलग है। उसे जब नदी में ले चलता तो सिर्फ पद्मनाभन को ही उसके विशाल पीठ पर बैठने का हक है। तब वह राजा बनेगा और घर के बच्चे प्रजा। वे चारों तरफ से उसे घेरकर चलते हैं। पद्मनाभन को बिठाते हुए वह नदी में कूद पड़ेगा और कुछ दूर तैरकर वापस आएगा। पद्मनाभन के इशारे पर नाचने में उसे ज्यादा संतोष होता था। जब नदी में इतना हलचल मचता तो पुल पर, दोनों किनारों पर लोग खड़े हो जाते और तालियां बजाते। युवा पीढ़ी का आदर, युवतियों का कटाक्ष ..... पद्मनाभन को और क्या चाहिए?

आदत के अनुसार नाना जी एक दिन अप्पु के साथ कुछ समय बिताने बाड़े में चले आए। अप्पु आँखें मूंदे जुगाली कर रहा था। ठीक सामने आने पर भी उसे मालिक का गंध न मिला होगा। किसी सपने में डूबकर बेचारा आँखें खोलना भूल गया होगा। नाना जी को गुस्सा आया। उन्होंने डंडा लेकर उसे पीटा। प्रहार इतना जोरदार था कि अप्पु आँखें खोले बिना ही उस दिशा में मुड़कर सींग मारने के लिए विवश हुआ। नानाजी धडाम से गिर पड़े और अप्पु तुरंत उठ गया। तब तक उसने जान लिया कि जिसे सींग मारा था वह अपने यजमान ही हैं। नज़रों में भरे अपराध बोध से वह सर झुकाए खड़ा हो गया। नानाजी किसी तरह उठ खड़े हो गए। हाथ से डंडा छूट गया था। उन्होंने उठते ही उसे टटोल लिया और गुस्सा उतरने तक अप्पु को मारा। गुस्से से वे तमतमा उठे थे। अंत में उंगली उठाकर गरजे – "आज से तू बाहर"। अप्पु की समझ में आया कि उसे घर से निकाला जा रहा है। पर बेचारा क्या कर सकता था? अगर उसमें बोलने की क्षमता होती तो क्षमा-याचना करता, मालिक का पैर पकड़ता। पर उसकी बेबसी को और क्या शब्द दें। कोई आवाज़ निकाले बिना वह रोते रहा। अगले दिन सुबह, उससे लिपट कर रोते हुए, पद्मनाभन पशु-मेले के हाट की तरफ रवाना हुआ। रास्ते में सभी लोग अप्पु के प्रति सहानुभूति दिखा रहे थे। पर कोई न कुछ कह सकता था और न ही कुछ कर सकता था।

सुग्रीवाज्ञा के अनुसार अप्पु को किसी कसाई को बेचा गया। बिदाई का समय आ गया। पैसे लेकर लौटते समय पद्मनाभन का दिल बुरी तरह धड़क रहा था। अप्पु के दिल की तड़प दूर-दूर तक उसे सुनाई दी। पीछे मुड़कर देखने की शक्ति उसमें नहीं रही। लड़खड़ाते पैरों से वह किसी तरह घर पहुंचा। पैसे पिता जी को पकड़ा कर सीधे वह चारपाई पर लेट गया। ऐसा लगा कि उसे बुखार होने वाला है।

अंधेरा छा गया। घर में छाई खामोशी को चीरते हुए कहीं से रंभाने की आवाज़ सुनाई दी। वह .... अप्पु की आवाज़ से मिलती-जुलती ..... पद्मनाभन चौंक कर उठ बैठा। बत्ती जलाकर वह बाड़े की ओर दौड़ा। हाँ, वहाँ उसका प्यारा अप्पु हांफते हुए खड़ा था।

"कमीने बच्चू, मुझे कितनी दूर भगाया तूने, छोड़ूंगा नहीं तुझे।" पीछे से एक निर्दयी की धमकी भी सुनाई पड़ी। साथ ही डंडे से उसे पीटने की आवाज़ भी आई। पद्मनाभन दौड़कर अप्पु से लिपट गया। "मारो मत। मैं अप्पु को छोड़ूंगा नहीं।" वह रोने लगा। "पीछे हट, पद्मनाभन", अब्बाजान के निर्मम स्वर से वह कांप उठा, मानो किसी ने उसपर तीर चलाई हो। अप्पु को भी गहरा आघात पहुंचा होगा। बेचारा, वह भी दो कदम पीछे हटा। आंसू टपकाते हुए, वह मालिक की तरफ अकिंचन की तरह देखने लगा।

"चले जा यहाँ से। अब यही तेरा मालिक है।" जलती हुई आँखों से उसे देखते हुए नानाजी बोले। "अब तुझे यहाँ रहने का हक नहीं।" सब स्तब्ध थे। कोई कुछ नहीं बोल पाया। विजयी भाव से कसाई ने अप्पु की रस्सी को पकड़कर खींचा और वह, डगमगाकर फाटक के बाहर कदम रखा। पद्मावति अम्मा यह देखकर सिसकने लगी। बच्चों की आँखें गीली हो गईं। दो पल बीत गए होंगे। किसी भारी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनाई पड़ी। सभी दौड़कर उस तरफ चले। उनका प्यारा अप्पु वहाँ गिर पडा था। देखते-देखते उसका प्राण-पखेरू उड़ गया। उसकी भीगी-भीगी आँखें बस अपने प्यारों को एक बार और देखने के लिए अब भी खुली थीं। मानो वे कह रही थीं –

"हे बेरहम, बेशरम मानव,
क्या तू जानता है मानवता का अर्थ?
मेरा यौवन, ऊर्जा, प्यार –
सब कुछ तूने बेदर्द छीन लिया।
अब मुझे तेरी निंदा, तिरस्कार, क्रोध
उपहार में मिला।
मैं तुझे माफ नहीं करूँगा।
मेरी मौत ही तेरे लिए सबसे बड़ी सजा रहे।
अलविदा।"

इंडिया गेट, नई दिल्ली

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली

राष्ट्रगान का अर्थ और इसे गाने के नियम..

निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

हमारा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। इस अवसर पर हमें याद करना चाहिए कि आजादी का यह पर्व बहुत लोगों की कुर्बानी देने के बाद आया है। अगर आज हम खुली हवा में सांस ले रहे हैं तो इसके पीछे लाखों लोगों का अमर बलिदान है, इसलिए आजादी का महत्व हर भारतीय को समझना चाहिए।

गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर ने भारत का 'राष्ट्रगान' लिखा था। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि राष्ट्रीय पर्वों के अवसरों पर 'तिरंगा' फहराया जाता है और इसके बाद राष्ट्रगान होता है, जिसे को गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर ने लिखा था। राष्ट्रगान के एक-एक शब्द का अर्थ अपने आप में देश की अमर गाथा सुनाता है, जिसे जानना हर किसी को जरूरी है।

राष्ट्रगान का अर्थ..

शब्द-अनुवाद-अर्थ

जन= People= लोग	गण= Group= समूह	मन= Mind = दिमाग
अधिनायक= Leader= नेता	जय हे= Victory= जीत	भारत= India=
भाग्य= Destiny= किस्मत	विधाता= Disposer= ऊपरवाला	पंजाब= Punjab= पंजाब
सिंध= Sindh=सिंध	गुजरात= Gujarat= गुजरात	मराठा= Maratha= मराठा (महाराष्ट्र)
द्रविड= South= दक्षिण	उत्कल= Orissa= उड़िसा	बंगा= Bengal= बंगाल
विंध्य= Vindhyas= विंध्याचल	हिमाचल= Himalay= हिमालय	यमुना= Yamuna = यमुना
गंगा= Ganges = गंगा	उच्छल= Moving= गतिमान	जलधि= Ocean = समुद्र

तरंगा= Waves = लहरें (धाराएं)
नामे = name = नाम
शुभ = Auspicious = मंगल

गाहे = Gaahe = गाओ
गाथा = Song = गीत
मंगल = Fortune = भाग्य
भारत = India = हिंदुस्तान

तब = Your = तुम्हारा
जागे= Awaken = जागो
आशीष= Blessings = आशीर्वाद
तब = Your = तुम्हारी
जन = People = लोग
दायक = Giver = दाता
भाग्य = Destiny = किस्मत

शुभ = Auspicious = मंगल
तब = Your = तुम्हारा
मांगे = Ask = पूछो

जय = Victory = जीत
गण = Group = समूह
जय हे = Victory Be = जीत
विधाता = Dispenser= ऊपरवाला

जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे=
Victory, Victory, Victory, Victory Forever =
विजय, विजय, विजय, विजय हमेशा के लिए ...
जय हिंद = JAIHIND

राष्ट्रगान के नियम

राष्ट्रगान के गाने की अवधि लगभग 52 सेकंड है। इसके बजते वक्त हर किसी को सावधान की मुद्रा में खड़ा होना चाहिए। बीमार, बुजुर्ग और छोटे बच्चे पर ये नियम लागू नहीं होता है। राष्ट्रगान को सबसे पहले बांग्ला भाषा में लिखा गया था। साल 1950 में इसे राष्ट्रगान के रूप में अंगीकृत किया गया।

लाल किला, नई दिल्ली

प्राचीन भारत के महान मनीषी

महर्षि सुश्रुत

महर्षि सुश्रुत प्राचीन भारत के महान चिकित्साशास्त्री एवं शल्यचिकित्सक थे। वे आयुर्वेद के महान ग्रन्थ "सुश्रुतसंहिता" के प्रणेता हैं। इनको शल्य चिकित्सा का जनक कहा जाता है। सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझाया गया है। शल्य क्रिया के लिए सुश्रुत 125 तरह के उपकरणों का प्रयोग करते थे। ये उपकरण शल्य क्रिया की जटिलता को देखते हुए खोजे गए थे। इन उपकरणों में विशेष प्रकार के चाकू, सुइयां, चिमटियां आदि हैं। सुश्रुत ने 300 प्रकार की ऑपरेशन प्रक्रियाओं की खोज की। सुश्रुत ने कॉस्मेटिक सर्जरी में विशेष निपुणता हासिल कर ली थी। सुश्रुत नेत्र शल्य चिकित्सा भी करते थे। सुश्रुतसंहिता में मोतियाबिंद के ओपरेशन करने की विधि को विस्तार से बताया गया है। उन्हें शल्य क्रिया द्वारा प्रसव कराने का भी ज्ञान था। सुश्रुत को टूटी हुई हड्डियों का पता लगाने और उनको जोडने में विशेषज्ञता प्राप्त थी।

आर्यभट

आर्यभट भारत के पहले महान गणितज्ञ तथा खगोल विज्ञानी थे। आर्यभट का जन्म 476 ईसवीं को पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना, बिहार) में हुआ था। उनके माता-पिता के नाम अज्ञात हैं। आर्यभट ने मुख्यतः गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में कार्य किया था। उनके प्रमुख ग्रंथ का नाम आर्यभटीय है, जिसमें उनके सभी खोज कार्य उपलब्ध हैं।

आर्यभट की मुख्य खोज कार्य/रचनाएँ हैं – आर्यभटीय, पाई का मान, शून्य की उत्पत्ति, अनिश्चित समीकरणों के हल, बीजगणितीय सूत्रों का प्रतिपादन, त्रिकोणमिति का प्रतिपादन, ग्रहों की गति के सिद्धांत, चंद्र ग्रहण व सूर्य ग्रहण का ज्ञान, नक्षत्र काल अंकगणित आर्य सिद्धांत आदि।

महर्षि कणाद

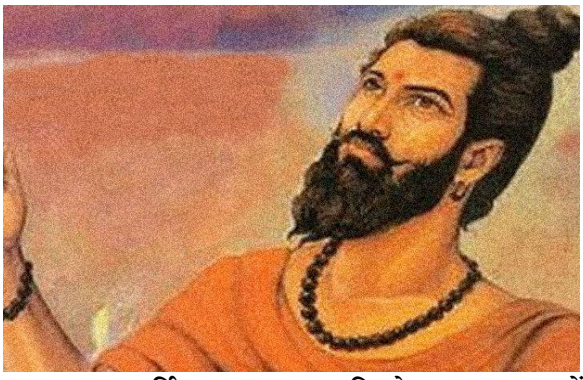

महर्षि कणाद एक ऋषि थे । वायुपुराण में उनका जन्म स्थान प्रभास पाटण बताया है । स्वतंत्र भौतिक विज्ञानवादी दर्शन प्रकार के आत्मदर्शन के विचारों का सबसे पहले महर्षि कणाद ने सूत्र रूप में लिखा । ये "उच्छवृत्ति" थे और धान्य के कणों का संग्रह कर उसी को खाकर तपस्या करते थे । इसी लिए इन्हें "कणाद" या "कणभुक्" कहते थे । किसी का कहना है कि कण अर्थात् परमाणु तत्व का सूक्ष्म विचार इन्होंने किया है, इसलिए इन्हें "कणाद" कहते हैं ।

कण सिद्धान्त - भौतिक जगत की उत्पत्ति सूक्ष्मातिसूक्ष्म कण परमाणुओं के संघनन से होती है- इस सिद्धांत के जनक महर्षि कणाद थे । गति के नियम - महर्षि कणाद ने ही न्यूटन से पूर्व गति के तीन नियम बताए थे ।

भास्कराचार्य

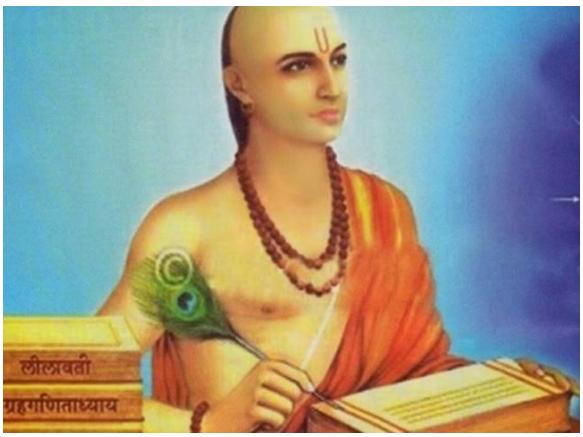

भास्कराचार्य या भास्कर द्वितीय (1114-1185) प्राचीन भारत के एक प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं ज्योतिषी थे । इनके द्वारा रचित मुख्य ग्रंथ "सिद्धान्त शिरोमणि" है, जिसमें लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित तथा गोला ध्याय नामक चार भाग हैं । ये चार भाग क्रमशः अंकगणित, बीजगणित, ग्रहों की गति से सम्बन्धित गणित तथा गोले से सम्बन्धित हैं । आधुनिक युग में धरती की गुरुत्वाकर्षण शक्ति की खोज का श्रेय न्यूटन को दिया जाता है । किंतु बहुत कम लोग जानते हैं कि गुरुत्वाकर्षण का रहस्य न्यूटन से भी कई सदियों पहले भास्कराचार्य ने उजागर कर दिया था ।

भास्कराचार्य ने अपने 'सिद्धांतशिरोमणि' ग्रंथ में पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के बारे में लिखा है कि 'पृथ्वी आकाशीय पदार्थों को विशिष्ट शक्ति से अपनी ओर खींचती है । इस कारण आकाशीय पिण्ड पृथ्वी पर गिरते हैं'। उन्होने "करणकौतूहल" नामक एक दूसरे ग्रन्थ की भी रचना की थी । ये अपने समय के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ थे । कथित रूप से यह उज्जैन की वेधशाला के अध्यक्ष भी थे । उन्हें मध्यकालीन भारत का सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ माना जाता है ।

बौधायन

बौधायन भारत के प्राचीन गणितज्ञ और शुल्ब सूत्र तथा श्रौतसूत्र के रचयिता थे । आचार्य बौधायन लगभग 1200 ई.पू. से 800 ई.पू.में वेदी ब्राह्मण और गणितज्ञ थे। ज्यामिति के विषय में प्रमाणिक मानते हुए सारे विश्व में यूक्लिड की ही ज्यामिति पढ़ाई जाती है। मगर यह स्मरण रखना चाहिए कि महान यूनानी ज्यामितिशास्त्री यूक्लिड सेपूर्व ही भारत में कई रेखागणितज्ञ ज्यामिति के महत्वपूर्ण नियमों की खोज कर चुके थे, उन रेखागणितज्ञों में बौधायन का नाम सर्वोपरि है । उस समय भारत में रेखागणित या ज्यामिति को शुल्व शास्त्रभी कहा जाता था।

बौधायन के सूत्र वैदिक संस्कृत में हैं तथा धर्म, दैनिक कर्मकाण्ड, गणित आदि से सम्बन्धित हैं । वे कृष्ण यजुर्वेद के तैत्तिरीय शाखा से सम्बन्धित हैं । सूत्र ग्रन्थों में सम्भवतः ये प्राचीनतम ग्रन्थ हैं । इनकी रचना सम्भवतः ८वीं-७वीं शताब्दी ईसापूर्व हुई थी । सबसे बड़ी बात यह है कि बौधायन के शुल्बसूत्रों में आरम्भिक गणित और ज्यामिति के बहुत से परिणाम और प्रमेय हैं, जिनमें २ का वर्गमूल का सन्निकट मान, तथा पाइथागोरस प्रमेय का एक कथन शामिल है।

नागार्जुन

नागार्जुन भारत के धातुकर्मी एवं रसशास्त्री थे । नागार्जुन का जन्म सन् ९३१ में गुजरात में सोमनाथ के निकट दैहक नामक किले में हुआ था । इस लोक-विश्वास को कि वह भगवान के संदेशवाहक हैं, रसरत्नाकर नामक पुस्तक लिख कर पुष्ट कर दिया । यह पुस्तक उनके और देवताओं के बीच बातचीत की शैली में लिखी गई थी। रसरत्नाकर में रस (पारे के यौगिक) बनाने के प्रयोग दिए गये हैं। इसमें देश में धातुकर्म और कीमियागरी के स्तर का सर्वेक्षण भी दिया गया था । इस पुस्तक में चांदी, सोना, टिन और तांबे की कच्ची धातु निकालने और उसे शुद्ध करने के तरीके भी बताये गए हैं।

नागार्जुन ने सुश्रुत संहिता के पूरक के रूप में 'उत्तर तन्त्र' नामक पुस्तक भी लिखी । इसमें दवाइयां बनाने के तरीके दिये गये हैं । आयुर्वेद की एक पुस्तक 'आरोग्यमंजरी' भी लिखी । उनकी अन्य पुस्तकें है- कक्षपूट तन्त्र, योगसर और योगाष्टक।

स्वतंत्रता संग्राम के महानायक

लेखा डी पी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

हमारा देश अंग्रेज़ी शासन से मुक्त होकर 15 आगस्त, 1947 को एक स्वतंत्र राष्ट्र बना था और अब आज़ाद होने के 75 वर्ष पूरे हो चुके हैं। हमें कभी भी देश के उन क्रांतिकारियों एवं वीर शहीदों को नहीं भूलना चाहिए जिनके निस्वार्थ बलिदान एवं अथक प्रयासों से हमें आज़ादी मिली। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के लिए जीवन, परिवार, संबंध और भावनाओं से भी ज़्यादा महत्वपूर्ण था हमारे देश की आज़ादी।

जब हम स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में सोचते हैं, तो हमारे मन में कई नाम आते हैं, जिसमें मुख्यतः महात्मा गाँधी, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह जैसे नाम आते हैं। यहाँ मैं स्वतंत्रता संग्राम के इन तीन महानायकों का स्मरण करना चाहूँगी जिन्होंने आज़ादी दिलाने में मुख्य भूमिका निभाई थी।

महात्मा गाँधी

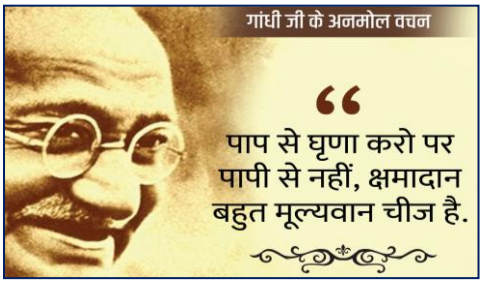

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जिनके त्याग, समर्पण, बलिदान की वजह से ही आज हम आज़ाद भारत में चैन की सांस ले रहे हैं। गाँधी जी ने सत्य और अहिंसा को अपना सशक्त हथियार मानकर भारत को आज़ादी दिलवाने के लिए कई बड़े आंदोलन लड़े थे। साथ ही उन्होंने लोगों को भी सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

महात्मा गांधी को बापूजी के नाम से भी पुकारा जाता है। वे सादा जीवन और उच्च विचार की सोच वाली व्यक्ति थे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व का प्रभाव न सिर्फ भारत में ही बल्कि पूरी दुनिया में डाला। गाँधीजी का नारा **“ करो या मरो ”** बहुत ही प्रभावशाली था। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गाँधी जी ने 08 अगस्त, 1942 को मुंबई में एक सभा में यह नारा दिया था। इसका अर्थ था कि या तो हम भारत को स्वतंत्र करा लें या इस प्रयास में अपनी जान दे दें। **“अहिंसा” और “सत्याग्रह”** के ज़रिए उन्होंने भारत को अंग्रेज़ों से स्वतंत्रता दिलाई।

पूरा भारत देश आज भी उनके द्वारा आज़ादी की लड़ाई में दिए गए त्याग, बलिदान की गाथा गाता है एवं उनके प्रति सम्मान प्रकट करता हैं।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारियों में नेताजी सुभाष चंद्र बोस का नाम भी आता है। नेताजी ने भारतीय राष्ट्रीय सेना का निर्माण किया था जो **"आज़ाद हिंद फौज"** के नाम से प्रसिद्ध थी। सुभाष चंद्र बोस और गाँधी जी के विचार बिलकुल अलग थे। नेताजी महात्मा गांधी को अहिंसावादी विचारधारा से सहमत नहीं थे। उनकी सोच नौजवानों वाली थी जो हिंसा में भी भरोसा रखते थे। दोनें की विचारधारा अलग थी लेकिन मकसद गुलाम भारत को आज़ाद कराने का ही था।

04 जुलाई, 1944 को बर्मा में भारतीयों के समक्ष दिए गए अपने एक भाषण में नेताजी ने भारतीयों से अपील की- **"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा"** और उनके इस उद्घोष ने करोड़ों भारतीयों में देश के प्रति बलिदान होने का जोश भर दिया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने अपने फौलादी इरादों और अपने साहसी कामों से भारत में अंग्रेज़ों की नींव कमज़ोर कर दी थी और उन्हें यह एहसास दिलवा दिया था कि वे भारत में ज़्यादा दिन तक शासन नहीं कर सकेंगे।

सुभाष चंद्र बोस भारत के एस सच्चे वीर सपूत और महान स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने पूरी ज़िंदगी देश को अंग्रेज़ों के चंगुल से आज़ाद करवाने के लिए कुर्बान कर दी। नेताजी के कार्यों और स्वतंत्रता के लिए किए गए प्रयासों को वंदना अर्पित कर आज भी उनकी स्मृति में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह

" शहीद-ए-आजम" के रूप में प्रसिद्ध भगत सिंह भारत के एक सच्चे देश भक्त, महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिनके रोम-रोम में देश भक्ति की भावना निहित थी।

सच्चे देश भक्त सरदार भगत सिंह के मन में अंग्रेज़ों के खिलाफ विद्रोह की भावना तो तभी से भड़क उठी थी, जब से जालियांवाला हत्याकांड में कई बेकसूर भारतीयों की मौत हो गई थी।

अंग्रेज़ शासकों का भारतीयों के खिलाफ अत्याचार उस समय बढ़ रहा था और देश की हालत बेहद बुरी हो गई थी। यह सब देखकर भारत के महान क्रांतिकारी भगत सिंह ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और खुद को स्वतंत्रता संग्राम में पूरी तरह समर्पित कर दिया। उन्होंने अपने क्रांतिकारी विचारों से भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश के युवा नौजवानों के अंदर आज़ादी पाने की इच्छा जगा दी थी और उनके अंदर एक नया जोश भर दिया था।

भगत सिंह ने महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए **" असहयोग आंदोलन "** में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और अपना भरपूर योगदान दिया था। गाँधीजी हिंसात्मक गतिविधियों से सहमत नहीं थे। वे शांति से आज़ादी की लड़ाई लड़ना चाहते थे। इसलिए भगत सिंह अहिंसावादी बातों को छोड़ कर दूसरी पार्टी में शामिल हों गए।

उन्होंने अंग्रेज़ी हुकूमत के बढ़ते अत्याचारों का जमकर विरोध किया था और मज़दूर विरोधी नीतियों को ब्रिटिश संसद में पारित नहीं होने देने के मकसद से ब्रिटिश सरकार की असेम्बली पर हमला कर दिया था। इसके बाद भगत सिंह और उनके साथी अपनी जगह से भागे नहीं बल्कि उन्होंने वहाँ खड़े होकर **" इंकलाब जिंदाबाद "** का नारा लगाया था। इसके लिए भगत सिंह और साथी दोनों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। उनपर मुकदमा चला और 23 मार्च, 1931 की रात भगत सिंह को फाँसी पर लटका दिया गया।

वे, भारत के एसे वीर सपूत थे, जिन्होंने सिर्फ 23 साल की उम्र में अपने देश के लिए फांसी को गले लगाया था।

गुलाम भारत को आज़ादी दिलवाने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस और शहीद भगत सिंह द्वारा किए गए त्याग और बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

भारत के नोबेल पुरस्कार विजेता

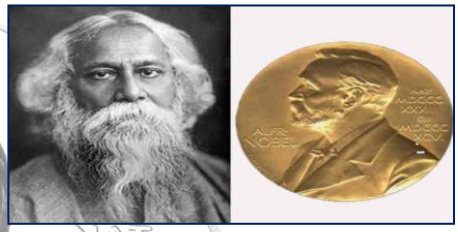

1. रवीन्द्रनाथ टैगोर - रविंद्रनाथ टैगोर को 1913 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया रविन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 को हुआ था। वे एक महान कवि, गीतकार, संगीतकार, नाटककार, निबंधकार और चित्रकार थे। रविंद्रनाथ टैगोर गुरुदेव के नाम से भी जाने जाते हैं। साहित्य के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए उन्हें यह पुरस्कार दिया गया। रविंद्रनाथ टैगोर पहले भारतीय हैं जिन्हें 1913 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें उनकी पुस्तक 'गीतांजलि' की रचना के लिए वर्ष 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी के साथ रविंद्रनाथ टैगोर नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय बने।

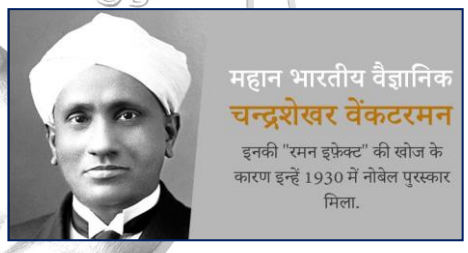

2. चंद्रशेखर वेंकटरामन - डॉ. चंद्रशेखर वेंकटरामन भौतिक शास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय तथा किसी भी श्रेणी में नोबेल पुरस्कार पाने वाले दूसरे भारतीय हैं। उन्हें 1930 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. सीवी रमन का जन्म तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली के निकट तिरुवाइक्कावल में 7 नवम्बर, 1888 को हुआ था उन्होंने प्रकाश पर गहन अध्ययन किया जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने रामन प्रभाव की खोज की। डॉ सी वी रामन के इसी खोज के लिए वर्ष 1930 में उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

3. डॉ. हरगोबिंद खुराना - डॉ. हरगोबिंद खुराना को चिकित्सा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं उनके असाधारण योगदान के लिए वर्ष 1968 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ हरगोविंद खुराना का जन्म पंजाब प्रांत के रायपुर (वर्तमान पाकिस्तान) में 9 जनवरी, 1922 को हुआ था। 1960 में वे विस्कॉसिन विश्वविद्यालय में प्राध्यापक बने। डॉ हरगोविंद खुराना ने चिकित्सा के क्षेत्र में आनुवांशिक कोड की व्याख्या की और प्रोटीन संश्लेषण में अनुवांशिक कोड की भूमिका का पता लगाया। उनके इसी खोज के लिए उन्हें वर्ष 1968 में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

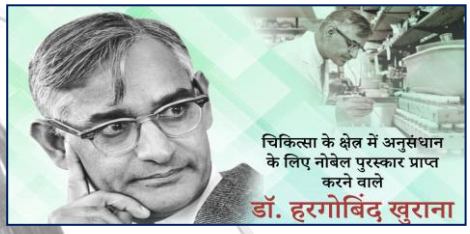

4. मदर टेरेसा - मदर टेरेसा को वर्ष 1979 में शांति के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त, 1910 को अल्बानिया में हुआ था। 1928 में वह मात्र 18 वर्ष की आयु में ही आयरलैंड की संस्था 'सिस्टर्स ऑफ लोरेटो' में शामिल हो गयी और इस संस्था की मिशनरी बनकर वर्ष 1929 में वह कोलकाता आ गईं। उन्होंने बेसहारा और बेघर लोगों की सेवा के लिए 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' नाम की संस्था बनाई तथा कुष्ठ रोगियों, नशीले पदार्थों की लत के शिकार बने लोगों के लिए 'निर्मल हृदय' नाम की संस्था बनाई। समाज कल्याण के क्षेत्र में उनके इसी असाधारण योगदान के लिए उन्हें 1979 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मदर टेरेसा भारत के साथ-साथ एशिया की पहली महिला है जिन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

5. सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर - डॉ. सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर को वर्ष 1983 में भौतिक शास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ सुब्रमण्यम एक भौतिक शास्त्री थे। उनका जन्म 19 अक्टूबर, 1910 को वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के लाहौर में हुआ था। उनकी शिक्षा चेन्नई के प्रेसिडेंसी कॉलेज में हुई, कॉलेज की पढ़ाई के बाद वे अमेरिका चले गए जहां उन्होंने खगोल विज्ञान, भौतिक शास्त्र तथा सौरमंडल से संबंधित विषयों पर अनेक पुस्तकें भी लिखीं। वे डॉ. सी.वी. रामन के भतीजे थे। शास्त्र के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

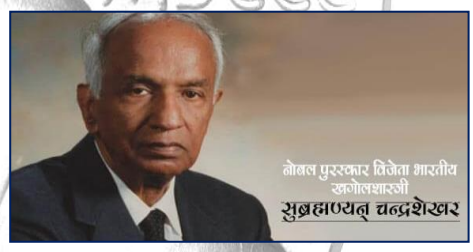

6. अमर्त्य सेन - प्रोफेसर अमर्त्य सेन को अर्थशास्त्र के लिए वर्ष 1998 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अमर्त्य सेन अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले एशियाई व्यक्ति थे। अमर्त्य सेन का जन्म 3 नवंबर, 1933 को कोलकाता के शांतिनिकेतन में हुआ था। वे एक विद्वान अर्थशास्त्री थे, जिन्होंने लोक कल्याणकारी अर्थशास्त्र की अवधारणा का प्रतिपादन किया। लोक कल्याण और आर्थिक विकास के लिए उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी। अर्थशास्त्र के क्षेत्र में उनकी असाधारण योगदान के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

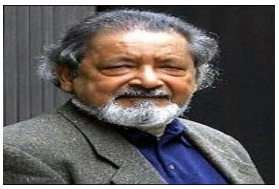

7. वी एस नायपॉल - भारतीय मूल के प्रसिद्ध ब्रिटिश लेखक वी एस नायपॉल (विद्याधर सूरजप्रसाद नायपॉल) को 1971 में बुकर प्राइज़ और वर्ष 2001 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वी एस नायपॉल का जन्म 17 अगस्त, 1932 को त्रिनिनाद में हुआ।

8. वेंकटरमण रामकृष्णन - भारतीय मूल के अमेरिकी विज्ञानी वेंकटरमण रामकृष्णन को वर्ष 2009 में रसायन विज्ञान के क्षेत्र में योगदान के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वेंकटरमण रामकृष्णन का जन्म वर्ष 1952 में तमिलनाडु के चिदंबरम जिले में हुआ था। वे एक प्रसिद्ध रसायन शास्त्र हैं, राइबोसोम की संरचना और उसकी कार्यप्रणाली पर अध्ययन के लिए वर्ष 2009 में अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थॉमस ए स्टेट्ज, इजरायल के ई योनथ और वेंकटरमण रामकृष्णन को संयुक्त रूप से इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

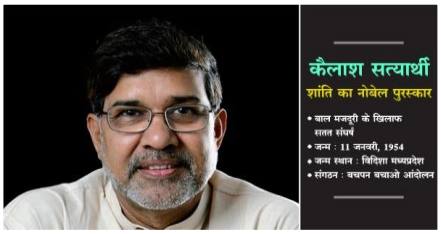

9. कैलाश सत्यार्थी - कैलाश सत्यार्थी को वर्ष 2014 में पाकिस्तान में लड़कियों के हक के लिए लड़ने वाले मलाला यूसुफजई के साथ संयुक्त रूप से 2014 के नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कैलाश सत्यार्थी का जन्म 11 जनवरी, 1954 को मध्यप्रदेश के विदिशा में हुआ। कैलाश सत्यार्थी एक भारतीय समाज सुधारक हैं, जिन्होंने भारत में बाल श्रम के खिलाफ आवाज उठाई और बच्चों के उचित विकास और शिक्षा के लिए अनेकों अभियान चलाएं। उनके इसी कार्य के लिए उन्हें 2014 में शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

10. अभिजीत बनर्जी -भारतीय मूल के अर्थशास्त्री अभिजीत बनर्जी को वर्ष 2019 में अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया अभिजीत बनर्जी का जन्म 21 फरवरी, 1961 को कोलकाता में हुआ था। वे एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैं, जिन्होंने विश्व में गरीबी कम करने की दिशा में असाधारण प्रयास किए उनकी इसी कार्य के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

स्वतंत्रता सेनानियों के नारे.....

आजादी के **75** साल हो गए, लेकिन देशवासी अपने पूर्वजों की कुर्बानियों को नहीं भूले। सेनानियों के लगाए नारे आज भी हर भारतवासी को उत्साह और उमंग से भर देता है।

15 अगस्त के दिन ही भारत माता के पैरों में बंधी बेड़ियां टूटकर चकनाचूर हो गई थीं। इसी दिन 1947 को देश ने पहली बार आजाद हवा में सांस लिया। वर्षों की त्याग और कुर्बानी 15 अगस्त, 1947 को तब सफल हो गई, जब देश की राजधानी दिल्ली में लाल किले पर तिरंगा शान से फहराया गया।

भारत आजादी का 75 वां सालगिरह मना रहा है। इस अवसर पर उन नारों को, जिन्हें स्वतंत्रतता सेनानियों ने आजादी की लड़ाई के दौरान जनमानस को मंत्र के रूप में दिया था –

(1) वंदे मातरम": बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

वंदे मातरम आजादी के बाद भारत का 'राष्ट्रीय गीत' भी बनाया गया। महान सेनानी बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने लोगों को इस गीत के जरिए भारत माता के महत्व को समझाया। उनके इस गीत ने जनमानस को देश पर गर्व करना सिखाया।

(2) "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूंगा": बाल गंगाधर तिलक

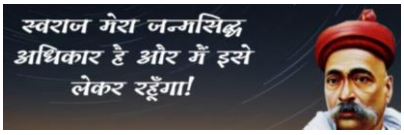

तिलक उन स्वतंत्रतता सेनानियों में गिने जाते हैं, जिन्होंने अपने विचारों से बड़े जनमानस को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। उन्होंने लोगों में 'स्वराज' की भावना जगाई और इसे हासिल करने के लिए संघर्ष का रास्ता भी बताया।

(3) "इंकलाब जिंदाबाद": भगत सिंह

अंग्रेजों के अत्याचार के विरोध में युवा भगत सिंह ने आगे बढ़कर न सिर्फ क्रांति का नेतृत्व किया, बल्कि भारत माता के लिए केवल 23 साल की उम्र में अपना सर्वोच्च बलिदान भी दिया। उन्होंने युवाओं को आजादी पाने के लिए 'इंकलाब' का रास्ता चुनने के लिए प्रेरित किया। आज भी उनका यह नारा किसी भी आंदोलन में मुखर आवाज होता है।

(4) "आराम हराम है": जवाहरलाल नेहरू

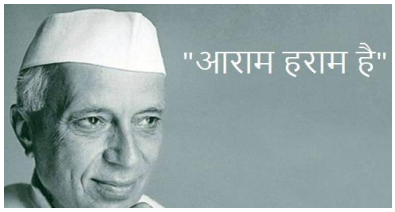

आजादी की लड़ाई में नेहरू अग्रणी पंक्ति के नेताओं में से थे। देश की आजादी के बाद वे पहले प्रधानमंत्री भी बने। आजादी की लम्बी लड़ाई में उन्होंने देशवासियों से बिना थके संघर्ष करने का आह्वान किया था। उन्होंने कहा था कि आजादी तक हमें आराम के बारे में सोचना भी नहीं है। उन्होंने आराम को हराम तक कह दिया। आज भी लोग कई बार जब जीवन में निराश होते हैं, तो सहसा उनके जहन में आता है "आराम हराम है।"

(5) "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा": नेताजी सुभाष चंद्र बोस

नेताजी का मानना था कि क्रांति के रास्ते चलकर ही आजादी मिल सकती है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया था कि वे आजादी पाने के लिए खुद को भी न्योछावर करने के लिए तैयार रहें।

(6) "सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा": मोहम्मद अल्लामा इकबाल

इकबाल साहब के लिखे इस गीत ने मानो देशवासियों को एक संजीविनी दे दी हो। देश प्रेम से ओत-प्रोत यह गीत हर आजादी के दीवानों को झूमा रहा था। आज भी लोग भारत माता की शान में इसे गाना नहीं भूलते।

(7) "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है": राम प्रसाद बिस्मिल

सरफरोशी की तमन्ना भारतीय क्रान्तिकारी बिस्मिल अज़ीमाबादी द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध गीत है, जिसे क्रांतिकारी राम प्रसाद बिस्मिल ने गाकर प्रसिद्ध किया था। बिस्मिल का दिया यह नारा क्रांतिकारियों के सीने में तूफान ला देता था। आजादी के दीवानों ने इसे दुहराते हुए ब्रिटिश हुकूमत से लोहा लिया।

(8) "मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश सरकार के ताबूत में एक-एक कील का काम करेगी": लाला लाजपत राय

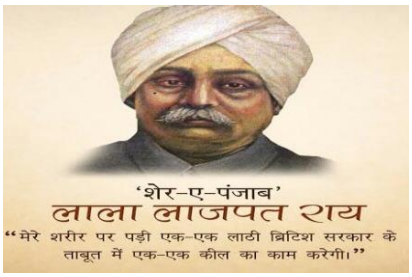

साइमन कमीशन का विरोध करने के लिए लाला लाजपत राय के साथ कई क्रांतिकारियों ने लाहौर रेलवे स्टेशन पर उन्हें काले झंडे दिखाए और 'साइमन वापस जाओ' का नारा लगाया। इस दौरान अंग्रेज अफसर 'सार्जेंट सांडर्स' ने लाला लाजपत राय की छाती और सिर पर लाठी से प्राण घातक प्रहार कर दिया। लाला लाजपत राय इससे विचलित नहीं हुए और साथी क्रांतिकारियों का उत्साह बढ़ाते हुए यह नारा लगाया।

(9) "अंग्रेजो भारत छोड़ो": महात्मा गांधी

भारतीय आजादी की लड़ाई के अग्रदूत महात्मा गांधी ने 1942 में ब्रिटिश हुकूमत को अंतिम चेतावनी देते हुए भारत छोड़ने का सीधा निर्देश दिया था। यही आंदोलन भारतीय स्वतंत्रतता संग्राम की आखिरी लड़ाई भी साबित हुई।

(10) "करो या मरो": महात्मा गांधी

'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन के दौरान ही महात्मा गांधी ने भारतीय जनमानस से आह्वान किया था कि जब तक आजादी मिल नहीं जाती, आंदोलन जारी रहेगा। गांधी जी के इस अपील ने ब्रिटिश हुकूमत की नींव हिला दी और देश छोड़ने पर मजबूर कर दिया।

गुरुनानक – जिन्होंने समाज को नई रोशनी दी

कविता सुरेश
वरिष्ठ लेखाकार

सिक्खों के प्राचीन धार्मिक ग्रंथों के अनुसार गुरुनानक का जन्म लाहौर के तलवंडी नामक ग्राम में हुआ था। पिता कालूचंद एवं माता तृप्ता के पुत्र नानक का नाम उनकी माँ के नाम पर पड़ा। अपने नाना के घर जन्म लेने के कारण माँ तृप्ता को नानकी कहा जाता था। उन्हीं के इस नाम पर पुत्र का नाम भी नानक रख दिया गया। फारसी, संस्कृत, हिंदी व पंजाबी की शिक्षा नानक को दी गई, किंतु अध्ययन में पर्याप्त रुचि रहने के बावजूद नानक का मन एकांत स्थल पर जाकर चिंतन-मनन में ही लगता था।

क्यों हिंदू अपने प्राचीन गौरव को भूल गए ? क्यों वे केवल भोग-विलास में रत हैं ? क्यों वे केवल अपनी ही वाह-वाह करने में लगे रहते हैं ? क्यों वे वेदों से विमुख हो चले हैं और क्यों उनका धर्म-चिंतन केवल रसोई के लिए चौका लगाने तक सीमित रह गया है आदि कुछ एसे प्रश्न थे जो नानक के मन में हलचल मचाए रहते थे। किसी सांसारिक काम में उनका मन ही न लगता। शायद विवाह उन्हें दुनियादारी सिखा दे, यह विचार कर उनके माता-पिता ने उनका विवाह 'सुलक्खनी' से कर दिया। उनके दो पुत्र हिए, किंतु विवाहित जीवन भी उनके चिंतन-मनन की प्रवृत्ति की भेंट चढ़ गया। उनकी पत्नी सुलक्खनी विवाह के कुछ वर्ष बाद ही तंग आकर अपने बच्चों को लेकर मायके चली

गई और नानक सत्य की तलाश में घर छोड़कर निकल पड़े। कहते हैं कि एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण करते-करते एक बार वन में उन्हें किसी ज्योति-पुरुष के दर्शन हुए और उसके बाद ही जैसे उनकी चेतना जाग्रत हो गई। नानक ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना को ही महत्व दिया। भक्ति निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति का एकमात्र मार्ग है, ऐसा उनका विश्वास था, लेकिन यह भक्ति भी ईश कृपा से ही मिल सकती है। निर्गुण ब्रह्म कहीं बाहर नहीं है।

नानक के नाम के महत्व को स्वीकार किया, लेकिन नाम का अर्थ नाम का जपना नहीं था। नाम का अर्थ था ध्यान, नाम के स्मरण द्वारा ही हम अपने मन के मैल को धो सकते हैं। गुरु नानक ने हिंदु धर्म, इस्लाम तथा सूफी संप्रदाय के सारे तत्व को लेकर ही एक नवीन धर्म की स्थापना की। यह धर्म पूर्णतया व्यावहिक धर्म था। जात-पात, ऊँच-नीच, कर्मकांड और मूर्तिपूजा के विरुद्ध यह एक शांत, किंतु गंभीर उद्घोष था। ऐसा उद्घोष जिसमें भावना की पवित्रता, हृदय की शुद्धि एवं आचरण की उच्चता पर बल दिया गया, ऐसा उद्घोष जो हिंदु-मुसलमान सभी के दिलों में उतर गया, ऐसा उद्घोष जिसके स्वरों में एक संदेश था। दुःख में भी दुःख न मानने का संदेश, कंचन को माटी सम मानने का संदेश।

लोकमान्य तिलकः एक युग निर्माता

कविता सुरेश
वरिष्ठ लेखाकार

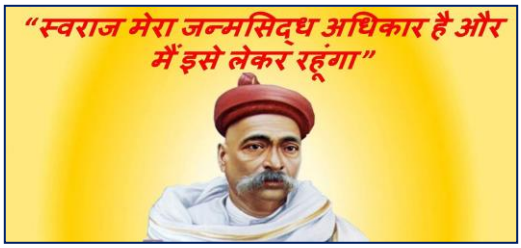

"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" - की घोषणा करनेवाले बाल गंगाधर तिलक निर्विवाद रूप से 20वीं शताब्दी के आरंभिक दो दशकों की भारतीय राजनीति के कर्णधार थे। सन् 1905 से 1918 तक की कालावधि को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का तिलक युग कहा जाता है जो पूर्णतया समीचीन है। इस युग में वैधानिकता की सवारी पर चलने वाले राजनीतिक याचना-कृति या भिक्षा-कृति का अंत हुआ। पूर्ण स्वराज्य की अभिलाषा को मानवीय नैतिकता के आधार पर वैचारिक अवलंब देनेवाले उस समय के भारतीय नेताओं में लोकमान्य तिलक अग्रणी रहे। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा 'मेरी कहानी' में लिखा है कि पुणे में तिलक का नाम बिजली की तरह चमकता था और स्वदेशी तथा बहिष्कार की आवाज़ गूँज रही थी..... हम सब बिना किसा अपवाद के 'तिलक-दल' या 'गरम-दल' के थे। हिंदुस्तान में यह नया दल इन दिनों इन्हीं नामों से पुकारा जाता था। लोकमान्य तिलक अपने समय के माने हुए विद्वान थे। संस्कृत के अन्वर्थक श्लोकों से शुरुआत करने की उनकी बड़ी रोचकता रही, जिसका प्रभाव समकालीन एवं परवर्ती पत्रकारों पर पड़ा।

दार्शनिक थे सरदार भगत सिंह - 23 मार्च शहीद दिवस

कविता सुरेश
वरिष्ठ लेखाकार

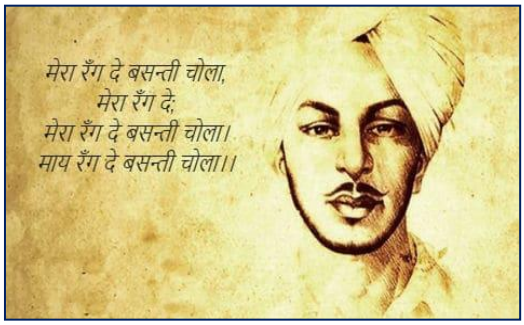

सरदार भगत सिंह का जन्म क्रांतिकारयों के परिवार में हुआ था। इसलिए अन्याय का विरोध करना उन्हें बचपन से ही सिखा दिया गया था। वे बचपन से ही अग्रेज़ों और पूंजीपतियों के जुल्मो-सितम देख रहे थे। तभी अमरिका और केनडा में बसे भारत के पंजाबी कृषकों ने गदर आंदोलन भी प्रारंभ कर दिया था। इससे भी भगत सिंह काफी प्रभावित थे। सरदार भगत सिंह तब बहुत अधिक आंदोलित हो उठे थे , जब उनके प्रेरणा स्रोत सरदार करतान सिंह सराभा को फांसी पर चढ़ा दिया गया था। सरदार करतान सिंह सराभा को 13 सितंबर 1914 को अंग्रेज़ों द्वारा फांसी दी गई थी। तब भगत सिंह 7 वर्ष के थे और सरदार करतान सिंह की उम्र केवल 20 वर्ष की थी। बचपन से ही सरदार भगत सिंह के मन में अग्रेज़ों के प्रति आक्रोश पनपने लगा था।

एक बार जब भगत सिंह बहुत छोटे थे, तब अपने परिजनों को खेतों में बीज डालते देखकर उन्होंने पूछा यह क्या कर रहे हो ? पिता ने उत्तर दिया-बेटा, फसल बो रहे है। भगत सिंह ने फिर पूछा- इससे क्या होगा ? पिता ने उत्तर दिया - इससे हमें कई गुना गेहूँ मिलेगा। पिता का उत्तर सुनकर भगत सिंह दौड़कर आए और घर से तलवार, बंदूक ले आए। वे खेत की ज़मीन खोदकर उसमें तलवार और बंदूक दबाने लगे। जब पिता ने पूछा - यो क्या कर रहे हो ? तो भगत सिंह ने कहा- मैं बंदूक की फसल बो रहा हूँ, जब इसमें ढेर सारी बंदूकें उगेगी, तो मैं सारे अंग्रेज़ों को मार भगाऊँगा। भगत सिंह की आरंभिक शिक्षा अपने पैतृक गांव बंगा में हुई थी। अब यह गाव पाकिस्तान के लाचलपुर जिले में है। इसके बाद भगत सिंह ने आगे की शिक्षा के लिए लाहौर के डी ए वी स्कूल में दाखिल ले लिया। अपने पिता के साथ भगत सिंह अक्सर अमृतसर भी जाया करते थे।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक मंगल पांडे

भारत को स्वतंत्रता दिलाने में सबसे ज्यादा योगदान मंगल पांडे जी का है, क्योंकि इन्होंने ही स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत की थी। इनके द्वारा लगाई गई चिंगारी से ही ब्रिटिश शासन की जड़ें भारत में समाप्त होनी शुरू हो चुकी थी। भारत सरकार ने इनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी की थी।

मंगल पांडे जी का जन्म स्थान : स्वतंत्रता संग्राम की मशाल जलाने वाले मंगल पांडे जी का जन्म बलिया जिले (उ.प्र.) के नगवा गांव में 19 जुलाई, 1827 को हुआ था। लेकिन कुछ इतिहासकार इनका जन्म फैजाबाद अयोध्या में मानते हैं। इनके पिता जी का नाम दिवाकर पांडे था।

पांडे जी का जन्म एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी और उस समय ब्रिटिश सेना में सिर्फ ब्राह्मण और मुसलमान वर्ग के लोगों को ही नौकरी दी जाती थी।

मंगल पांडे का ब्रिटिश सेना में शामिल होना : मंगल पांडे अपनी 22 उम्र की अवस्था (1849) में ही ब्रिटिश सेना में शामिल हो गए थे और कोलकाता के बैरकपुर छावनी में अपनी ड्यूटी करने लगे थे। कुछ समय बाद 34 ब्रिगेडियर बटालियन के एक सैनिक के रूप में उन्हें शामिल कर लिया गया था।

उसी समय ब्रिटिश सेना ने भारत सैनिकों के लिए एक नई राइफल का निर्माण किया था, जिसमें बंदूक से गोली चलाने के लिए पहले कारतूस को मुंह से खोलना पड़ता था। उसी समय एक ऐसी अफवाह फैला दी गई थी कि बंदूक में प्रयुक्त होने वाले कारतूस गाय और सुअर की चर्बी से मिलकर बनता है। यह कारतूस हिंदू और मुसलमान दोनों धर्मों के लिए नापाक था। मंगल पांडे ने अपने साथी सैनिकों की बात पर भरोसा नहीं किया था।

मंगल पांडे का विद्रोह शुरू करना : एक दिन जब वह स्नान आदि करके रास्ते से गुजर रहे थे, तो उन्हें प्यास लगी। उन्होंने हलवाई की दुकान पर जाकर पानी पीना चाहा, तो इससे पहले ही एक छोटी जाति वाले ने पानी के मटके को छू

लिया था। ऐसे में जब मंगल पांडे ने उस छोटी जाति वाले को मना किया तो उसने कहा कि जब आप बंदूक चलाते हैं तो वह भी तो गाय और सुअर की चर्बी से मिलकर बनी होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए मंगल पांडे तुरंत ही छावनी पहुंच गए थे और उस जगह पर पहुंचे, जहां पर कारतूस तैयार किए जाते थे उन्होंने वहां पर देखा कि सूअर और गाय की चर्बी रखी हुई थी और कुछ सैनिक कारतूस बनाने के लिए इसका प्रयोग कर रहे थे।

उस दृश्य को देखकर मंगल पांडे अचंभित रह गए थे। उन्होंने तुरंत अपने सीनियर से इस बारे में चर्चा की तो उनके सीनियर ने कहा कि हम आपके इस मामले में कुछ सहायता नहीं कर सकते। अब मंगल पांडे ने ब्रिटिश कंपनी के खिलाफ विद्रोह की आग भड़काना शुरू कर दिया था।

1857 की क्रांति मे मंगल पांडे का योगदान : सन् 1857 मे यह क्रांति पूरे उत्तर भारत में आग की तरह फ़ैल चुकी थी। 9 फरवरी, 1857 मे नया कारतूस जब पैदल सेना में बांटा गया तो मंगल पांडे ने उस कारतूस को लेने से मना कर दिया था। ऐसा करने पर मंगल पांडे की बंदूक और उनकी वर्दी को उतारने का हुक्म दे दिया गया। मंगल पांडे ने ब्रिटिश सरकार का यह आदेश भी मानने से मना कर दिया।

सन् 1857 में 29 मार्च को वर्दी छीनने के लिए अंग्रेज़ अफसर लेफ्टिनेंट बाग ने जैसे ही अपने हाथ बढ़ाए तो इन्होंने उन पर हमला कर दिया। ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए यह कारतूस घातक साबित हुआ। 29 मार्च को ही मंगल पांडे ने छावनी से विद्रोह का बिगुल बजा दिया था।

मंगल पांडे ने अपने अन्य साथियों से इसमें खुले समर्थन करने के लिए आग्रह किया, लेकिन उन्होंने इसके खिलाफ समर्थन देने के लिए मना कर दिया था। ईस्ट इंडिया कंपनी के जर्नल जान हेएरसेये ने जमींदार ईश्वर प्रसाद को मंगल पांडे को गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया था। लेकिन जमींदार ने मना कर दिया।

सारे रेजिमेंट ने मंगल पांडे को गिरफ्तार करने से मना कर दिया था, लेकिन एक सिपाही शेख पलटू मंगल पांडे को गिरफ्तार करने के लिए तैयार हो गया। कुछ समय के बाद अंग्रेज सिपाहियों ने मंगल पांडे को गिरफ्तार कर लिया।

मंगल पांडे की मृत्यु : पांडे जी को 6 अप्रैल ,1857 को फांसी की सजा सुनाई गई। कोर्ट के अनुसार मंगल पाण्डे को 18 अप्रैल को फांसी दी जानी थी। फांसी के फैसले से जनता में आक्रोश व्याप्त हो गया था, इसी को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने मंगल पांडे को 18 अप्रैल को फांसी ना देते हुए 10 दिन पहले यानी की 8 अप्रैल को ही फांसी पर लटका दिया था।

मंगल पांडे जी की इस आदत की घटना पूरे भारत में फैल चुकी थी। जगह-जगह पर अंग्रेज सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शुरू हो चुके थे। जल्द ही अंग्रेज सरकार ने इस विद्रोह का दमन कर दिया था, लेकिन यह

ज्वाला अब भड़क चुकी थी। एक महीने के बाद ही 10 मई सन् 1857 को एक बार फिर उत्तर प्रदेश के मेरठ में एक बार फिर बगावत शुरू हो गई। अब अंग्रेज़ सरकार को भी पता चल गया था कि भारत में अब ज्यादा दिनों तक शासन नहीं किया जा सकता। इसके तुरंत बाद ही भारत में कई नए कानून लागू कर दिए गए थे। नए कानून बनाने का सिर्फ एक ही उद्देश्य था की कोई दूसरा सैनिक मंगल पांडे जैसे बगावत न कर सके। लेकिन मंगल पाण्डे ने भारत में क्रांति की बीज बोए थे, जिसने अंग्रेज़ सरकार को 100 वर्ष के भीतर ही हिन्दुस्तान से ही उखाड़ कर फेंक दिया था। अब लोगों के मन में भी स्वतंत्रता की मशाल जलने लगी थी। भारत में प्रत्येक जगह पर अंग्रेज सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शुरू हो चुके थे।

वर्ष 2021-2022 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से संबंधित कार्यों का संक्षिप्त विवरण

हिंदी पत्रिका "श्रुति" का प्रकाशन : कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 27वें एवं 28वें ई-संस्करणों का प्रकाशन किया गया।

हिंदी कार्यशाला : वर्ष 2021-22 के दौरान प्रधान कार्यालय एवं शाखा कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 02.09.2021, 22.09.2021, 22.12.2021 एवं 25.03.2022 को ऑनलाइन हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम (कार्यालय-2) की गतिविधियां

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम (कार्यालय-2) के कार्यकलापों का संयोजन प्रधान महालेखाकार (ले व ह), केरल का प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम द्वारा किया जा रहा है। तिरुवनंतपुरम नगर के 44 केंद्र सरकारी कार्यालय इस समिति के सदस्य हैं।

समिति की छमाही बैठकें : समिति के वर्ष 2021-22 की दो छमाही बैठकें श्रीमती जी सुधर्मिनी, प्रधान महालेखाकार की अध्यक्षता में दिनांक 05.10.2021 एवं 23.03.2022 को ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गई।

संयुक्त राजभाषा उत्सव : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम (कार्यालय-2) के तत्वावधान में "संयुक्त राजभाषा उत्सव" के सिलसिले में 02.03.2022 से 04.03.2022 तक सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए ऑनलाइन माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। नराकास

राजभाषा पुरस्कार योजना के अधीन सदस्य कार्यालयों में वर्ष 2020-2021 के दौरान राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन, हिंदी में मूल काम करने के लिए नराकास विशेष प्रोत्साहन योजना और सदस्य कार्यालयों से प्रकाशित उत्तम हिंदी पत्रिकाओं के लिए नराकास पुरस्कारों का निर्धारण किया गया।

संयुक्त हिंदी कार्यशाला : 09.03.2022 को अपराह्न 02.30 से अपराह्न 05.00 बजे तक नराकास के सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी ई-टूल्स विषय पर ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

वर्ष 2020-2021 के दौरान मूल कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना के अधीन पुरस्कार प्राप्त अधिकारी

प्रथम पुरस्कार
श्रीमती आर एस ब्रिंदा
सहायक लेखा अधिकारी

द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती आर कमला
सहायक लेखा अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग में प्रयुक्त पदनाम	
Accountant	लेखाकार
Accountant, Senior	वरिष्ठ लेखाकार
Accountant General	महालेखाकार
Accountant General (A&E)	महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Accountant General (Audit)	महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
Accounts Officer, Senior	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
Additional Deputy Comptroller & Auditor General	अपर उप नियंत्रक महालेखापरीक्षक
Administrative Officer	प्रशासन अधिकारी
Assistant Administrative Officer	सहायक प्रशासन अधिकारी
Assistant Accountant General	सहायक महालेखाकार
Assistant Cashier	सहायक रोकड़िया
Assistant Comptroller & Auditor General	सहायक नियंत्रक महालेखापरीक्षक-
Assistant Director	सहायक निदेशक
Assistant Director of Audit & Accounts(P&T)	सहायक निदेशक लेखापरीक्षा तथा लेखा (डा. व दू.सं.)
Assistant Director of Audit (Defence Services)	सहायक निदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएँ)
Assistant Librarian	सहायक लाइब्रेरियन (सहायक पुस्तकाध्यक्ष)
Assistant Private Secretary	सहायक निजी सचिव
Assistant Superintendent	सहायक अधीक्षक
Audit Officer Senior	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
Auditor	लेखापरीक्षक
Auditor, Senior	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
Care-taker	रखवाला
Cashier	रोकडिया
Chief Auditor (Commercial Accounts)	मुख्य लेखापरीक्षक (वाणिज्यिक लेखे)
Chief Auditor	मुख्य लेखापरीक्षक
Clerk/Typist	लिपिक/टंकक
Comptroller & Auditor General	नियंत्रक-महालेखापरीक्षक
Controller of Accounts	लेखा नियंत्रक
Controller General of Accounts	महा लेखा नियंत्रक
Daftry	दफ्तरी
Data Entry Operator	आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक/डेटा एंट्री ऑपरेटर
Data Manager	डेटा प्रबंधक

Deputy Accountant General	उप महालेखाकार
Deputy Chief Auditor(Commercial Accounts)	उप मुख्य लेखापरीक्षक (वाणिज्यिक लेखे)
Deputy Chief Auditor (Railways)	उप मुख्य लेखापरीक्षक (रेलवे)
Deputy Comptroller & Auditor General	उप नियंत्रक महालेखापरीक्षक
Deputy Controller of Accounts	लेखा उप नियंत्रक
Deputy Director	उप निदेशक
Deputy Director of Audit (P&T)	उप निदेशक लेखापरीक्षा (डा. व दू.सं.)
Deputy Director of Audit (Defence Services)	उप निदेशक लेखापरीक्षा (सेवाएँरक्षा)
Deputy Director, Commercial Audit	उप निदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
Director of Audit Commerce, Work & Miscellaneous	निदेशक लेखापरीक्षा, वाणिज्य, निर्माण एवं विविध
Director of Audit and Accounts	निदेशक खापरीक्षालेखा तथा ले
Director of Audit, Central	निदेशक लेखापरीक्षा केंद्रीय
Director of Audit, Central Revenue	निदेशक लेखापरीक्षा केंद्रीय राजस्व
Director of Audit (P&T)	निदेशक लेखापरीक्षा (डा. व दू.सं.)
Director of Audit (Defence Services)	निदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएँ)
Director of Commercial Audit	निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
Director of Inspection	निरीक्षण निदेशक
Director of Receipt Audit	निदेशक प्राप्ति लेखापरीक्षा
Director of Audit Scientific & Commercial Departments	निदेश लेखापरीक्षा वैज्ञानिक और वाणिज्यिक विभाग
Divisional Accountant	प्रभागीय लेखाकार
Gardener	माली
Indian Audit & Accounts Services Probationer	भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा सेवा परिवीक्षाधीन अधिकारी
Joint Director	संयुक्त निदेशक
Junior Gestetner Operator	कनिष्ठ गेस्टेटनर प्रचालक
Librarian	लाइब्ररियन (पुस्तकाध्यक्ष)
Lower Division Clerk	अवर श्रेणी लिपिक
Member Audit Board & Ex-Officio Director of Commercial Audit	अध्यक्ष लेखा परीक्षा बोर्ड और पदेन निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
Messenger	संदेशवाहक
Multi-Tasking Staff (MTS)	बहुकार्य कर्मी (एमटीएस)
Personal Assistant	निजी सहायक

Principal Accountant General	प्रधान महालेखाकार
Principal Accountant General (A&E)	प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी)
Principal Accountant General (Audit)	प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा)
Receptionist	स्वागती
Record Sorter	रिकार्ड सोर्टर
Resident Concurrent Audit Officer	निवासी संवर्ती लेखापरीक्षा अधिकारी
S.A.S. Accountant	अधीनस्थ लेखा सेवा लेखाकार
S.A.S. Accountant on probation	परिवीक्षा पर अधीनस्थ लेखा सेवा लेखाकार
S.A.S. Apprentice	अधीनस्थ लेखा सेवा अप्रेंटिस
S.A.S. Superintendent	अधीनस्थ लेखा सेवा अधीक्षक
Secretary to the Comptroller&Auditor General	नियंत्रक महालेखापरीक्षक का सचिव
Secretary to the Accountant General	महालेखाकार के सचिव
Selection Grade Auditor	प्रवरण श्रेणी लेखापरीक्षक
Selection Grade Clerk	प्रवरण श्रेणी लिपिक
Selection Grade Daftry	प्रवरण श्रेणी दफ्तरी
Selection Grade Lower Division Clerk	प्रवरण श्रेणी अवर श्रेणी लिपिक
Selection Grade Sorter	प्रवरण श्रेणी सॉर्टर
Senior Auditor	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
Senior Deputy Accountant General	वरिष्ठ उप महालेखाकार
Senior Gestetner Operator	वरिष्ठ गेस्टेटनर प्रचालक
Sorter	सॉर्टर/छँटाईकार
Staff Car Driver	स्टाफ कार ड्राइवर
Stenographer	आशुलिपिक
Supervisor	पर्यवेक्षक
Superintendent	अधीक्षक
Sweeper	मेहतर
Telephone Operator	टलिफोन प्रचालक
Translator	अनुवादक
Typist	टंकक
Upper Division Clerk	उच्च श्रेणी लिपिक
Watchman	चौकीदार
Water-man	पानी वाला
Welfare Assistant	कल्याण सहायक
Welfare Officer	कल्याण अधिकारी

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

01.10.2021 से 31.03.2022 तक की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची			
क्र.सं.	**नाम**	**पदनाम**	**सेवानिवृत्ति की तारीख**
1.	प्रशांत पी	सहायक लेखा अधिकारी	31.10.2021
2.	बाबू पी टी	बहु कार्य कर्मी	31.10.2021
3.	मेर्सी फिलिप	वरिष्ठ लेखाकार	30.11.2021
4.	आशा जयराम एम पी	सहायक लेखा अधिकारी	30.11.2021
5.	बालचंद्रन नायर पी एम	सहायक लेखा अधिकारी	30.11.2021
6.	मल्लिका सी जे	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.11.2021
7.	संतोष इट्टियेरा के	सहायक पर्यवेक्षक	30.11.2021
8.	जयश्री एस एल	सहायक लेखा अधिकारी	30.11.2021
9.	पुरुषोत्तमन पडिक्कलेट्टी	सहायक लेखा अधिकारी	30.11.2021
10.	जयकृष्णन टी	पर्यवेक्षक	31.12.2021
11.	अलमेलु जी एन	पर्यवेक्षक	31.12.2021
12.	रेणुका एस	सहायक पर्यवेक्षक	31.12.2021
13.	सनलकुमार एम	सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2022
14.	प्रकाशकुमार वी पी	सहायक लेखा अधिकारी	31.01.2022
15.	मुरलीधरन वी आर	सहायक लेखा अधिकारी	31.01.2022
16.	सलीम ए	सहायक लेखा अधिकारी	31.01.2022
17.	सेबास्ट्यन के एस	वरिष्ठ लेखाकार	31.01.2022
18.	अनीस के फ्रांसिस	सहायक लेखा अधिकारी	31.01.2022
19.	जेम्स वी जे	पर्यवेक्षक	31.01.2022
20.	नंदकुमारन ए	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.01.2022
21.	जॉण कुरुविला	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	28.02.2022
22.	लिसि एन सी	सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2022
23.	शिवदासन एम	सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2022
24.	उषाकुमारी आर	सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2022
25.	डेनि ए कैतारन	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2022
26.	गीता एन	सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2022
27.	माथ्यु फिलिप (सं.2)	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2022
28.	रजिता के वी	पर्यवेक्षक	31.03.2022
29.	सुरेश कुमार टी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.03.2022

सेवानिवृति पर बधाई

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वर्गीय जाबिर कुट्टी
पूर्व सहायक लेखा अधिकारी

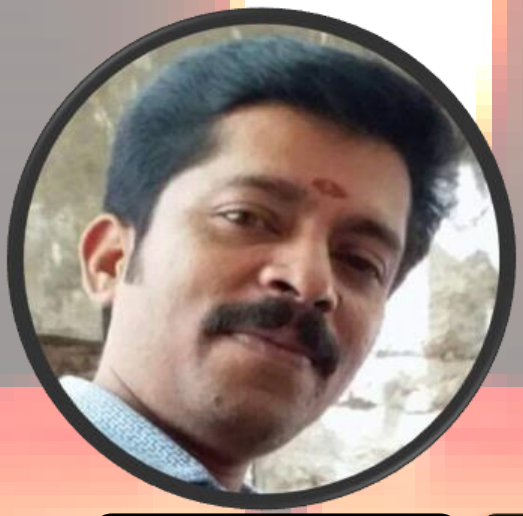

स्वर्गीय अनीष फर्नांडिस
पूर्व वरिष्ठ लेखाकार

स्वर्गीय प्रदीप
पूर्व वरिष्ठ लेखाकार

प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695001